सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

# जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 17 • अंक 12 • 5 मार्च 2021 • मूल्य : 20 रु.

मुमुक्षु रीतेश भाई शाह, रायचूर

मुमुक्षु अनुराग भंसाली, फलोदी

मुमुक्षु राजेशभाई धोका, रायचूर

मुमुक्षु महावीर बोहरा, धोरीमन्ना

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री

**जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा.**

को

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

( 27 मार्च 2021 )

मुमुक्षु अमित बाफना, गदग

मुमुक्षु शुभम् सिंघवी, चौहटन

मुमुक्षु रजत सेठिया, चौहटन

## सुविहित उत्सव पालीताना, 6 मई 2021

# श्री शांतिनाथ जिनालय बालोतरा प्रतिष्ठा की झलकियां

**सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।**
**निव्वाणं परमं जाइ घयसित्ते व पावए॥**

सरल मनुष्य को शुद्धि प्राप्त होती है। शुद्ध मनुष्य में धर्म स्थिर होता है। जिस में धर्म स्थिर होता है वह घृत से अभिषिक्त अग्नि की तरह परम निर्वाण को प्राप्त होता है।

One who is straightforward attains purity. One who is pure becomes steadfast in religion. Such a person attains the highest emancipation (Nirvana), like the Iustre of fire sprinkled with ghee.

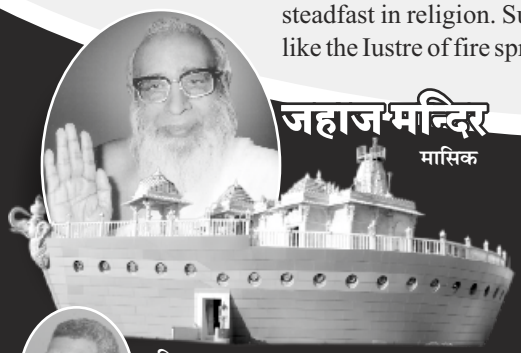

**जहाज मन्दिर**
मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**

वर्ष : 17 अंक : 12 5 मार्च 2021 मूल्य 20 रू.

**प्रधान संपादक :**
**डॉ. यू.सी. जैन ( महामंत्री )**

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

**सदस्यता शुल्क**

| | |
|---|---|
| संस्था संरक्षक | : 21,000 रूपये |
| मानद संरक्षक | : 11,000 रूपये |
| 15 वर्षीय सदस्यता | : 2500 रूपये |
| 12 वर्षीय सदस्यता | : 2000 रूपये |
| 6 वर्षीय सदस्यता | : 1000 रूपये |
| त्रिवार्षिक सदस्यता | : 500 रूपये |
| वार्षिक सदस्यता | : 200 रूपये |

**सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि**
**ICICI की किसी भी शाखा में**
**SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST**
**BANK - ICICI JALORE**
**ACCOUNT NO. 065301000256**
**IFSC CODE - ICIC0000653**

**सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक**
**श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट**
**जहाज मन्दिर**
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर ( राज. )
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
**www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org**

## अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. नवप्रभात | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 04 |
| 2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1 | हैदराबाद चारकमान दादावाड़ी | 05 |
| 3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1 | हैदराबाद ( कोठी ) | 06 |
| 4. धर्म रक्षा करता है | मुनि समयप्रभसागरजी म. | 07 |
| 5. अष्टकं सद्गुरुश्री जिनमणिप्रभसूरेः | मुनि मलयप्रभसागरजी म. | 09 |
| 6. नेमिनाथ मेरे... | मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म. | 10 |
| 7. अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री को जन्म दिवस.. | ललिता श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर | 11 |
| 8. उत्तराधिकारी | प्र. गौतम बी. संकलेचा | 12 |
| 9. खरतरगच्छाधिपति श्री को बधाई | संघवी लाधमलजी मावाजी मरडिया | 13 |
| 10. समाचार दर्शन | संकलित | 14 |
| 11. जटाशंकर | आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. | 34 |


## विशेष दिवस

7 मार्च श्री सुविधिनाथ च्यवन कल्याणक
9 मार्च श्री आदिनाथ केवलज्ञान कल्याणक
10 मार्च श्री श्रेयांसनाथ जन्म कल्याणक, श्री मुनिसुव्रतस्वामी केवलज्ञान कल्याणक
11 मार्च श्री श्रेयांसनाथ दीक्षा कल्याणक, पंचक प्रारंभ 09.20
12 मार्च पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री वासुपूज्यस्वामी जन्मकल्याणक
13 मार्च श्री वासुपूज्य दीक्षा कल्याणक, दादा जिनकुशलसूरि 688वीं पुण्य तिथि, देराउर, मालपुरा व बरमसर मेला
14 मार्च मीनार्क कुमुहूर्त्ता प्रारंभ शाम 6.04
15 मार्च श्री अरनाथ च्यवन कल्याणक
17 मार्च श्री मल्लिनाथ च्यवन कल्याणक
18 मार्च आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरि जी म.सा. पुण्यतिथि, बूढ़ा ( म.प्र. )
20 मार्च चौमासी अठाई प्रारंभ, रोहिणी
22 मार्च श्री संभवनाथ च्यवन कल्याणक
23 मार्च पुष्य नक्षत्र प्रारंभ रात्रि 10.44
24 मार्च पुष्य नक्षत्र समाप्त रात्रि 11.11
26 मार्च श्री मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक, श्री मुनिसुव्रतस्वामी दीक्षा कल्याणक श्री सिद्धाचल जी की फाल्गुन फेरी
27 मार्च चौमासी प्रतिक्रमण, पू. आ. गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. का जन्मदिवस
1 अप्रैल श्री पार्श्वनाथ च्यवन एवं केवलज्ञान कल्याणक
2 अप्रैल श्री चन्द्रप्रभस्वामी च्यवन कल्याणक
4 अप्रैल वर्षीतप प्रारंभ, श्री आदिनाथ जन्म एवं दीक्षा कल्याणक
8 अप्रैल चतुर्थ दादा श्री जिनचंद्रसूरि जन्मतिथि, खेतासर मेला
10 अप्रैल पाक्षिक प्रतिक्रमण

प्रवचन चल रहा था!

मैं वक्ता भी था, श्रोता भी!

बल्कि श्रोता पहले था, वक्ता बाद में!

मेरा कहा मैं सुन रहा था।

दो शब्दों का प्रयोग प्रवचन में मेरे द्वारा हुआ- मेरा और हमारा!

प्रवचनोपरान्त दोनों शब्दों पर चिन्तन करने लगा।

'मेरा' इस शब्द का प्रयोग कहाँ करना?

'हमारा' इस शब्द का प्रयोग किनके लिए करना?

एक वचन के लिये मेरा और बहुवचन के लिये हमारा शब्द-प्रयोग होना चाहिये।

पर गहराई से जब चिंतन किया तो निष्कर्ष निकला कि आत्मा, धर्म, परमात्मा, गुरुदेव के लिये 'मेरा' शब्द प्रयोग होना चाहिये।

और मकान, दुकान, कार आदि सांसारिक पदार्थों के लिये 'हमारा' शब्द प्रयोग होना चाहिये।

'मेरा' इस शब्द का अर्थ यह नहीं कि मेरा ही है, तुम्हारा नहीं! बल्कि यह है कि 'मेरा' तो है ही।

'हमारा' शब्द का अर्थ है- यह केवल मेरा नहीं है, बल्कि औरों का भी है।

लोग विपरीत शब्द-प्रयोग करते है।

कार, रूपया आदि के लिये मेरा शब्द प्रयोग करते हैं। मेरा अर्थात् मेरा ही, और किसी का नहीं। मंदिर, उपाश्रय, गुरु आदि के लिये हमारा शब्द प्रयोग करते हैं।

'हमारा' शब्द का अर्थ है- यह कोई मेरे अकेले का थोडी है, तुम सबका भी तो है। ऐसा विचार हमें जिम्मेदारी और अपनत्व से दूर कर देता है। मेरे मन में प्रसन्नता छलक उठी इस विचार से कि प्रभु, गुरु, धर्म मेरा है! इस गहन चिन्तन के मोतियों को हृदय में धारण कर मैंने परम प्रसन्नता का अनुभव किया।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 14

# मेड़चल

—मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
— साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

भारत के दक्षिणी प्रान्त आन्ध्र प्रदेश भी एक समय में जैन धर्म व संस्कृति के दिव्य वातावरण से ओतप्रोत था। विशाल जिन मंदिरों में गूंजता घंटनाद मोक्ष की यात्रा प्रारंभ करने का उद्घोष करता था। तो भक्त समूह बडी संख्या में वीतराग परमात्मा की उपासना साधना करके अपने जीवन को धन्य बनाता था। जैन साधुओं के धर्मलाभ वचनों से आम जनता वीतराग पथ का आलम्बन स्वीकार कर अपना जीवन यापन करती थी।

इसी आन्ध्र प्रदेश के एक गांव मेडचल जो सिकन्द्रबाद से 27 कि.मी. की दूरी पर है, में 72 जिनालय का निर्माण हुआ है। यह निर्माण सिकन्द्राबाद निवासी श्री कस्तुरचंदजी माणकलालजी झाबक के प्रबल पुरूषार्थ व संकल्प का परिणाम है।

उन्होंने जंगल में मंगल करते हुए इस धरा पर जिन निर्माण का सपना देखा जो विस्तृत होते होते 72 जिनालय में परिणत हुआ। सकल श्री संघ से सहयोग से बने इस जिन मंदिर दादावाडी का भूमिपूजन 25 मई 97 को, खात मुहूर्त्त 15 जनवरी 1999 को तथा 24 जनवरी 1999 को शिलान्यास विधान संपन्न हुआ। ये सारे विधि विधान तथा परमात्मा की प्रतिमा का प्रवेश आचार्य श्री कलापूर्णसूरिजी की निश्रा में संपन्न हुआ।

तत्पश्चात् जब 72 जिनालय की योजना बनी तो साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. की निश्रा में 23 मई 2010 को 72 जिनालय शिलान्यास विधान संपन्न हुआ।

इस विशाल मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 8 दिसम्बर 2013 को मुनि पीयूषसागरजी म. आदि की निश्रा में संपन्न हुई। मूल गर्भगृह में परमात्मा जय त्रिभुवन पार्श्वनाथ प्रभु बिराजमान है।

दादावाडी का निर्माण स्वतंत्र रूप से हुआ है। दादावाडी के मध्य में कलात्मक देवकुलिका का निर्माण हुआ है। इसमें मूलनायक दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की दिव्य प्रतिमा प्रतिष्ठित है। साथ ही मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि दादा गुरुदेव भी आशीष की बरसात करते हुए बिराजमान है। एक गोखले में चौथे दादा जिनचन्द्रसूरि एवं सामने पू. गणनायक श्री सुखसागरजी म. बिराजमान है।

पता :
**श्री जय त्रिभुवन पार्श्वधाम ७२ जिनालय**
रेल्वे स्टेशन के सामन, मड़चल-501401 आर. आर. जिला आ. प्र.
मोबाइल : 9440443340, 9393333012

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 15

# पार्श्वमणि-पेद्दतुम्बलम् तीर्थ

आंध्र प्रदेश जैन धर्म का महाप्रभावक एवं समृद्ध क्षेत्र था, ऐसा आगमिक उद्धरणों से स्पष्ट होता है।

यह क्षेत्र अनेक आचार्यों का विहार-प्रवास रहा और अनेक राजा जैन धर्म की समुपासना करते थे। प्राचीन अवशेष जैन धर्म की जाहोजलाली को प्रकट करते हैं। अत्यल्प समय में एक तीर्थ पूरे भारत में छा गया है- उसका नाम है पार्श्वमणि!

लगभग 55-56 वर्ष पूर्व पेद्दतुम्बलम् गाँव में कुएँ की खुदाई के समय प्रभु पार्श्वनाथ की अमृत से छलकती एक कृष्णवर्णीय प्रतिमा प्रकट हुई। जैन घर एक भी न होने से जैन संघों, जैनाचार्यों ने उस अतिशयी प्रतिमा को प्राप्त करने के अनेक प्रयास किये, पर नहीं मिली। आदोनी का चातुर्मास सम्पन्न कर साध्वी सुलोचना श्री जी म., सुलक्षणा श्री जी म. पेद्दतुम्बलम् पधारे और चमत्कार हुआ! 50 वर्षों से इन्कार की जा रही प्रतिमा उन्हें गाँव वालों ने समर्पित कर दी। उस गाँव में तीर्थ बना है- पार्श्वमणि! तीर्थ की शोभा, निरालापन देखते ही बनता है।

पार्श्वनाथ प्रभु का विशाल-कलात्मक मंदिर, जिसकी प्रतिष्ठा पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागर जी म. एवं पू. पंन्यास श्री चन्द्रजीत विजय जी म. की संयुक्त निश्रा में वि. सं. 2064 फाल्गुन वदि 10 रविवार 2 मार्च, 2008 को विशाल जनमेदिनी के मध्य सम्पन्न हुई। पार्श्वमणि प्रभु की प्रतिमा तो अत्यन्त प्राचीन, सातिशयी और मनोहर प्रतीत होती है। इसके साथ-साथ आदिनाथ, महावीर स्वामी आदि अनेक प्रभु तीर्थ परिसर में अमीवर्षा कर रहे हैं।

जिनमंदिर के निकट ही दादावाड़ी का निर्माण हुआ है जिसमें चौमुख चारों दादा गुरुदेवों की दिव्य प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। इसके साथ पू. आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि जी म., प्रवर्तिनी प्रेम श्री जी म. एवं भैरवद्वय भी विराजमान किये गये हैं।

दादावाड़ी का विशाल हॉल अपने आप में अद्‌भुत है। यहाँ गुरुदेव की अविरल कृपा अविरल बरस रही है। इसके साथ तीर्थ परिसर में गुरु मंदिर भी बना है, जिसमें कलिकाल कल्पतरू हेमचन्द्राचार्य, राजेन्द्रसूरि, शान्तिसूरि आदि विराजमान किये गये हैं। मंदिर में शिल्पकला का कार्य जैसे खिल उठा है। विशाल गंभारा... दिव्य रंगमण्डप... अनुपम शृंगार चौकी...। नीचे उतरते समय दोनों तरफ नाकोड़ा भैरव, पद्मावती देवी आदि शासन-भक्त देव-देवी विराजमान किये गये हैं।

इस तीर्थ भूमि का प्रभाव ही निराला है। प्रतिष्ठा से पूर्व ही अनेक धार्मिक आयोजन यहाँ सम्पन्न हुए हैं और प्रतिष्ठा के बाद तो जैसे पदयात्रा संघ, उपधान तप आदि कार्यक्रमों की लहर सी छा गयी है।

तीर्थ परिसर में उपाश्रय, आराधना भवन, धर्मशाला आदि की पर्याप्त सुविधा है। विशेष इस तीर्थ की प्रतिष्ठा के प्रसंग पर साध्वी सुलक्षणा श्री जी म. ने अट्‌ठम के पारणे, आयंबिल फिर अट्‌ठम, इस प्रकार वीश स्थानक तप कर आत्म-शुद्धि का अनुष्ठान साधा।

पता :

**श्री पार्श्वमणि तीर्थ**

पेद्दतुम्बलम् (आदोनी)-जिला-कर्नूल, आंध्र प्रदेश

दूरभाष : 08512-257432, 98661 19698

कहानी
2

# धर्म रक्षा करता है

—मुनि समयप्रभसागरजी म.

(गतांक से आगे)

श्रेष्ठी धनदत्त प्रसन्न हुआ मगर उसके लोभी मन ने एक कुटिलता भरा उसे सुझाव दिया। सौ स्वर्ण मोहरों के लोभ ने उसे उपकारी के प्रति कृतज्ञ बनने के बदले उसे कृतघ्न बनने को सहमत कर दिया। उसने नागदत्त का इन्तजार करना उचित नहीं समझा। क्योंकि इन्तजार करने पर उसे नागदत्त को सौ स्वर्ण मोहरें देनी पड़ेगी। इधर नागदत्त टापू में भूख-प्यास से मर जाएगा और मेरी सौ स्वर्ण मोहरें बच जाएगी। लोभ के वशीभूत होकर उसने अन्याय से भरा कदम उठाकर जहाज को तुरन्त आगे बढ़ाने का आदेश दे दिया।

नागदत्त पहाड़ी से नीचे उतरा। इतने में जहाज निकल चूका था। उसे भूख-प्यास सताने लगी। चारों तरफ पानी ही पानी था। पर पीने योग्य पानी नहीं था और खाने के लिए भी कोई फल वाला वृक्ष नहीं था जिससे वह अपनी क्षुधा शान्त कर सके। यहाँ रहकर भूख प्यास से तड़प-तड़प कर मरना पड़ेगा। ऐसी दारूण मौत से आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान के कारण दुर्गति का भागी बनने की अपेक्षा समुद्र में छलांग लगाकर आत्मघात करना ज्यादा श्रेष्ठ मानकर उसने नवकार महामंत्र का स्मरण करके समुद्र में छलांग लगाई।

समुद्र में छलांग लगाते ही नवकार महामंत्र के प्रभाव से एक बड़े मगरमच्छ ने अपना आहार जानकर उसे पूरा का पूरा निगल लिया और तुरन्त दूसरे मत्स्यों से अपने आपको बचाता हुआ तेज गति से बढ़ते हुए समुद्र के किनारे के पास पहुँच गया और नागदत्त उसके शरीर में मूर्च्छित हो चुका था। अचानक एक तेज लहर मगरमच्छ पर पड़ी की सहसा उसका मुँह खुला और नागदत्त को लहर अपने साथ में बहाकर ले गयी। किनारे पर शीतल हवा और जल के स्पर्श से उसकी मुर्च्छा टूटी और वह जागृत होकर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद उसने उस तट पर पीने के लिए पानी की खोज की। एक छोटा सा जलाशय मिल गया जिसके किनारे पर वृक्ष थे। वृक्षों पर फल लदे हुए थे। उसने सरोवर का पानी पिया और फल खाकर अपनी क्षुधा शान्त की। कुछ दिन इसी प्रकार फलाहार करते हुए बिताये। एक दिन विचार किया कब तक यहाँ इस प्रकार रहूँगा। निकलने का साहस कर आगे बढ़ चला। भटकते-भटकते, पूछताछ करते-करते एक दिन अपने नगर वाराणसी पहुँच गया।

नगर पहुँच कर जीविका चलाने के लिये नीतिपूर्वक व्यापार करने लगा। संतोष पूर्वक अपना जीवन यापन करने लगा। एक दिन जब नागदत्त को पता चला कि धनदत्त श्रेष्ठी विदेश से धन कमाकर लौट आया है। तो धनदत्त श्रेष्ठी द्वारा जहाज निकालने वाले को जो सौ स्वर्ण मोहरे पुरस्कार में देने का निर्णय किया गया था। इसलिये नागदत्त सौ स्वर्ण मोहरें मांगने के लिये उसके पास गया।

नागदत्त ने किसी भी प्रकार की शिकायत किये बिना पुरस्कार में प्राप्त सौ स्वर्ण मोहरें मांगी। लोभी और कपटी धनदत्त ने सौ स्वर्ण मोहरें तो देना दूर रहा बल्कि उसे पहचानने से भी इंकार कर दिया। तुम झूठ बोल रहे हो ऐसा आरोप लगाकर उसे तिरस्कार पूर्वक अपने घर से निकाल दिया। नागदत्त अपने पुण्य में कमी समझ कर चुपचाप वहाँ से आ गया। और अपने व्यापार में मशगूल बनकर उस घटना को भूलाने का प्रयत्न करने लगा।

इसी नगर में प्रियमित्र नामक सार्थपति रहता था। सार्थपति के रूपवती और शील आदि गुणों से अलंकृत एक पुत्री थी। पुत्री का नाम नागवसु था। वह कलाओं में निपुण थी। उसने सुन रखा था नागदत्त न्यायनीति पूर्वक धनार्जन करता है, संतोषी वृत्ति वाला होने के साथ-साथ व्रतधारी एवं धर्मनिष्ठ श्रावक भी है। उसके गुणों को सुनकर नागवसु ने नागदत्त को अपना जीवन साथी बनाने का मन ही मन निर्णय कर लिया।

इसी नगर का एक नगररक्षक जिसका नाम वसुदेव था।

वह वसुदेव कुटिल था। लोगों को आपस में कलह कराने में निपुण था। कुकृत्यों के लिये सदा तत्पर रहता था। सारे नगरवासियों का अप्रीति का पात्र था। राजा का खास सेवक होने के कारण प्रजा उसके विरूद्ध कुछ भी कह नहीं पाती थी। वसुदेव ने प्रियमित्र सार्थपति की पुत्री नागवसु के रूप पर मोहित हो गया और उसने प्रियमित्र से उसकी पुत्री मांगी। प्रियमित्र ने कहा मैं विचार करूंगा ऐसा कहकर बात टाल दी और अपनी पुत्री की इच्छानुसार उसका विवाह नागदत्त के साथ करवाने का निश्चय किया।

शुभ मुहूर्त में नागदत्त के साथ नागवसु की शादी करवा दी। नागदत्त के साथ नागवसु के विवाह की बात सुनकर वसुदेव बहुत क्रोधित हुआ और नागदत्त से वह नागवसु को पाने के ख्याब देखने लगा। किसी भी प्रकार से नागवसु को प्राप्त करने के लिए षड़यंत्र रचने की योजनाएं बनाने लगा। मौके की तलाश में बैठे वसुदेव को एक बार नागदत्त को फंसाने का अवसर हाथ लग गया।

एक दिन वहाँ का जितशत्रु राजा नगर भ्रमण करता हुआ नगर के किनारे स्थित उद्यान में क्रीड़ा करने के लिये गया। उद्यान से वापस राजमहल के लिये निकला तो रास्ते में राजा के कान से कुण्डल गिर गया। राजमहल में पहुँचने पर जब राजा का हाथ कान खुजलाने के लिये कान पर गया तब उसे पता चला कि कान में कुण्डल नहीं है। उसने अपने सेवकों को कुण्डल खोजकर लाने का आदेश दिया। संयोग से उस दिन अष्टमी थी। नागदत्त के पर्वतिथि को पौषध करने का नियम था। पौषध में वह प्राय: वन में जाकर कायोत्सर्ग में लीन हो जाता था। नागदत्त अपने घर से निकल कर उसी उद्यान वाले रास्ते से होकर वन में जा रहा था। वहीं मार्ग पर राजा का गिरा हुआ कुण्डल नागदत्त ने देखा। अदत्तादान व्रत के कारण उसे छुआ तक नहीं बल्कि उस मार्ग को छोड़कर दूसरे मार्ग से वन में पहुँच कायोत्सर्ग में लीन हो गया।

इधर वसुदेव उस कुण्डल को ढूंढता हुआ जहाँ कुण्डल गिरा था वहाँ पहुँच गया। कुण्डल अभी तक वैसे ही पड़ा हुआ था। वसुदेव ने गिरे हुए कुण्डल को उठाया। उसके कुटिल मन ने चाल चली। उसने कुण्डल को एक कपड़े में लपेट लिया। उसे पता था कि आज अष्टमी को नागदत्त वन में पौषध लेकर ध्यान में तल्लीन होगा। इसलिए यह नागदत्त को फँसाने का सुन्दर मौका जानकर नागदत्त के पैरों के कपड़े में लपेटा हुआ कुण्डल उसके पास रखकर राजा के पास पहुँच गया।

राजा के पास पहुँचकर वन की शोभा का वर्णन करते हुए कहा कि अभी वन भ्रमण के लिये चलिये। बड़ा सुहावना मौसम है। बहुत ही चपलता से उसने राजा को अपने साथ आने के लिये सहमत कर लिया। राजा और वसुदेव वन में घुमते हुए वहाँ पहुँच गये जहाँ नागदत्त कायोत्सर्ग में लीन था। वसुदेव ने जाकर नागदत्त के पैरों के पास कपड़े में लिपटे हुए कुण्डल को उठाकर दिखाया। राजा से कहने लगा कि मैं नगर रक्षा के लिए घूमते-घूमते जब राजमार्ग से गुजर रहा था। तब देखा कि नागदत्त नीचे नजरे किए हुए भूमि को देखता हुआ चल रहा था। चलते-चलते इसे नीचे झुककर जमीन पर कुछ उठाते हुए मैंने देख लिया इसी कारण मुझे इस पर जो शक था वह सही निकला। राजा ने उसी समय नागदत्त को मृत्युदण्ड की सजा सुनायी।

अब वसुदेव मन ही मन सोचने लगा नागवसु अब मेरी हो जाएगी। नागदत्त की अच्छी छवि को बिगाड़ने के लिए उसने नागदत्त का ध्यानभंग कर गिरफ्तार किया। गधे पर बिठाकर नगर भ्रमण कराते हुए सभी के सामने उस पर राजा के कुण्डल चुराने का आरोप सुनाया। और उसके आगे वाजिंत्र बजाते-बजाते वध स्थल की ओर ले जाकर शूली पर लटकाया गया।

(क्रमश:)

# बामनोर में आराधना भवन का भूमि पूजन

बामनोर 25 फरवरी। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा व प्रेरणा से दि. 25.2.2021 को श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ बामनोर के तत्वावधान में श्री जिनकुशलसूरि आराधना भवन हेतु भूमि पूजन किया गया।

ज्ञातव्य है किसन् 2017 में इसी नगर में पूज्य गुरुदेवश्री की प्रेरणा व निश्रा में श्री विमलनाथ प्रभु के जिनालय व दादा श्री जिनकुशलसूरि गुरुदेव की दादावाड़ी की भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। आराधना भवन निर्माण हेतु श्री देवीचंद छाजेड़ के भतीजे श्रीमान् किशनलालजी छाजेड़ ने भूमि दान का लाभ लिया।

गुरु-
जन्मदिवस
वर्धापना

# अष्टकं सद्गुरुश्रीजिनमणिप्रभसूरेः

( वसन्ततिलका-वृत्तेन )

रचयिता– मुनिः मलयप्रभसागरः

**सुश्राद्धपारसमलस्य सुपुत्ररत्नं, वंशे सदा सुललितं रजनीकरं तम् ।**
**जातं हि मोकलसरे सुकलानिधानं, वन्दे सदा जिनमणिप्रभसूरिशक्रम् ॥१॥**

अर्थ-श्रावकप्रवर श्री पारसमलजी लूंकड के पुत्ररत्न एवं उनके वंश में सुन्दर-सौम्य-शीतल चन्द्र के समान, मोकलसर की माटी में जन्में एवं सकल-कलाओं के निधानभूत ऐसे पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीन्द्र को मैं सदा-सदा वन्दन करता हूँ।

**गम्भीरधीरजनवन्द्यसुधीसुसाधुं, वात्सल्यवारिधिगुणाम्बुधिपार्श्वभक्तम् ।**
**श्रीरोहिणीसुतसुशासनदिव्यदीपं, वन्दे सदा जिनमणिप्रभसूरिशक्रम् ॥२॥**

अर्थ-धीर, गम्भीर, भक्तवर्ग के श्रद्धाकेन्द्र, गीतार्थ, वात्सल्य-वारिधि, सद्गुणों के सागर, परमात्मा पार्श्वनाथ के भक्त, माँ रोहिणी (साध्वी रतनमाला श्रीजी म.सा.) के लाडले पुत्र एवं जिनशासन में दीपक की भांति ज्ञान-प्रकाश फैलाने वाले साधुश्रेष्ठ पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीन्द्र को मैं सदा-सदा वन्दन करता हूँ।

**आचार्यकान्तिगुरुराजसुशिष्यश्रेष्ठं, भक्तप्रियञ्च जनवल्लभमिष्ठभाषम् ।**
**भद्रंकरं कविकिरीटप्रभूतशिष्यं, वन्दे सदा जिनमणिप्रभसूरिशक्रम् ॥३॥**

अर्थ-पूज्याचार्य श्रीजिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा. के प्रधान शिष्य, भक्तों के प्यारे, मिश्री की भांति मीठा बोलने वाले, कल्याण करने वाले, कविकिरीट एवं विस्तृत-शिष्य-गण के नायक पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीन्द्र को मैं सदा-सदा वन्दन करता हूँ।

**सुस्वच्छमार्गजिनशासनराजमान-माचारपञ्चकसुधर्मसुपालयन्तम् ।**
**दीक्षाप्रदायिनमहो किल तारयन्तं, वन्दे सदा जिनमणिप्रभसूरिशक्रम् ॥४॥**

अर्थ-मोक्ष-प्राप्ति के लिए सुस्वच्छ-सुविहित-मार्ग स्वरूप जिनशासन पर राज्य करते, पंचाचार (आचार्य के धर्म) को पालते हुए एवं मुझे दीक्षा देने वाले इस कारण भवसागर से तारने वाले पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीन्द्र को मैं सदा-सदा वन्दन करता हूँ।

**वैराग्यवासितगिरा जनबोधिनं तं, विज्ञानिमौनिगुणितात्त्विकदेशनं तम् ।**
**निस्तन्द्रपुण्यनिचयं हि गताभिमानं, वन्दे सदा जिनमणिप्रभसूरिशक्रम् ॥५॥**

अर्थ-वैराग्य वासित वाणी के द्वारा जन-जन को सम्यग्बोध देने वाले, ज्ञानी, ध्यानी, मौनी, गुणवान् तात्त्विक देशना देने वाले, अप्रमादी, नम्र, ऋजु एवं अतिपुण्यशाली पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीन्द्र को मैं सदा-सदा वन्दन करता हूँ।

**तीर्थंकरोक्तरसपानपिपासुकूपं, गच्छे वरे खरतरे रममाणभूपम् ।**
**देवेन्द्रवन्दितसुजङ्गमतीर्थरूपं, वन्दे सदा जिनमणिप्रभसूरिशक्रम् ॥६॥**

अर्थ-तीर्थंकर की वाणी के रसपान को करने की प्यास वाले (भव्यवर्ग) के लिए कुँए के समान हैं, अतिप्राचीन खरतरगच्छ (सुविहित मार्ग) पर हुक्म चलाते राजा है एवं देव-देवेन्द्रों द्वारा वन्दित, पूजित जंगम तीर्थ पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीन्द्र को मैं सदा-सदा वन्दन करता हूँ।

(शेष पृष्ठ 10 पर)

गीत
गाता चल
3

# नेमिनाथ मेरे...

रचयिता– मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.

**( तर्ज- तेरा यार हूँ मैं... )**

तेरा दर है... मुझे सबसे प्यारा, मुझ पापी का ये पालनहारा
आके दर पे मैं आनन्द पाता, दिल में सुख का सागर लहराता
दर्शन तेरे... पाने से ही होते पूरे हर अरमान मेरे.... ।।
नेमिनाथ मेरे...

चलो चले गिरनार की भूमि पर, जहाँ नेमि प्रभुवर राज करे
आजा करे भक्ति दिल में श्रद्धा भरे, भक्तो के... वो काज करे...
नयना तेरे, अमृत भरे, पीने को तेरे द्वारे खडे
दास तेरा यह प्यासा खडा, कृपा करो हे परमेश्वरा..
शरणे तेरे... आकर के ही, सपने हुए सब साकार मेरे...।।
नेमिनाथ मेरे...

Scan me Now
for Song

लाखों जनम हम साथ में ही रहे, क्यूं भूले मेरी यारी को
बुला ले अपने पास में दादा तूं, प्रतिमा लगे मनहारी वो
याद करूँ, उदास रहूँ हर पल मैं तेरे पास रहूँ
आश यही, निराश नहीं करना मुझे तेरा यार जो हूँ
साथी मेरे... साथ तूं रह, टालो मेरे यह संसार फेरे... ।।
नेमिनाथ मेरे...

चरणे तेरे माँ अम्बिका नित रहे, भक्तों की सदा सेवा करे
श्रेष्ठी भीम रत्न धार पेथड समा, लक्ष्मी तन मन अर्पण करे
तीरथ पे तेरे पाऊँ विजय, नेमि मेरे, मेरे साथ तूं रह
अम्बिका माता सहयोग से लक्ष्य मेरा साध पाऊँगा मैं
कान्ति-मणि हर पल यही गाए 'नेमि' गीत दर्द से भरे...।।
नेमिनाथ मेरे...

(शेष पृष्ठ 9 का)

**उत्तुङ्गभालरविवक्त्रसुरम्यपादं, गोधूमवर्णिशशिसौम्यमुखारविन्दम् ।**
**ओष्ठस्मितं सुनयनं गजगामिनं तं, वन्दे सदा जिनमणिप्रभसूरिशक्रम् ॥७॥**

अर्थ-अत्युन्नत ललाट, सूर्य की भांति तेजस्वी मुखमंडल, रमणीय चरण-कमल, शशि (चन्द्र) की तरह सुन्दर-सलोना मुखवदन, ओष्ठ-पटल पर हल्की-हल्की मुस्कान, सुन्दर लोचन-युगल एवं गजगामी चाल से चलने वाले इत्यादि शारीरिक-सौष्ठव से युक्त गेहूँआ वर्ण वाले पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीन्द्र को मैं सदा-सदा वन्दन करता हूँ।

**वात्सल्यदृष्टिशममूर्त्तिसहिष्णुचङ्ग-मेकान्तशान्तरससागरसूरिसारम् ।**
**क्षेमंकरं मलयमानसमन्दिरस्थं, वन्दे सदा जिनमणिप्रभसूरिशक्रम् ॥८॥**

अर्थ-वात्सल्य दृष्टि से हमेशा अपने शिष्य-भक्तादि वर्ग पर वात्सल्य बरसाने वाले, समतामूर्त्ति, मनोहर, शांत-रस के समुद्र, सूरिओं (आचार्यों में) श्रेष्ठ, कुशल-क्षेम-कल्याण करने वाले एवं मेरे (मुनि मलयप्रभसागर) मन-मन्दिर में रहने वाले पूज्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीन्द्र को मैं सदा-सदा वन्दन करता हूँ।

पादलिप्तपुरे 6/10/2020

जन्मदिवस बधाई

# अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री को जन्म दिवस की बधाई

—ललिता श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर—मुंबई

जन्म दिवस है आज आपका देते है बधाई !
हृदय की हरेक उर्मि आपको देती है बधाई !!
मोकलसर की पावन भू पर जन्म आपने पाया !
मां रोहिणी की कुक्षी को आपने किया सवाया !!
हर्षित हुआ मोकलसर जब आपको पाया!
लुंकड कुल के भाग्य सवाये आनंद आनंद छाया !!
मीठालाल नाम पाकर मीठा बने चहुं ओर !
कान्ति गुरु के चरणों में नाच उठा मन मोर !!
पाकर गुरु के चरणों को पाया अमृत आज !
गुरु चरणों में ज्ञान-ध्यान हो गुरु को नाज !!
मीठा से मणिप्रभसागर नाम में है विश्वास !
गुरु ने घड़ा हीरे को भरा उसमें विश्वास !!
पादरु की पावन भू पर गणी पद धन्य हुआ !
पहली प्रतिष्ठा, पहली दीक्षा पादरु पवित्र हुआ !!
वीर प्रभु की अमृत वाणी चहुं ओर है फैलानी !
लक्ष्य और साधना से भारत के बने सैलानी !!
जहाज मंदिर को गुरु चरणों में किया समर्पित !
गुरु की अमर स्मृति को विश्व में किया चर्चित !!
धुलेवा में अमर शिल्प पर किया अलौकिक काम !
आपकी प्रज्ञा और ऊर्जा से गज मंदिर का हुआ नाम !!
ऐतिहासिक प्रतिष्ठोत्सव का नजारा चहुं ओर छाया !
आदि जिनेश्वर बिराजे गज मंदिर नाम पाया !!
कुशल वाटिका ने राजहंस की कृति को पाया !
मुनिसुव्रत को पाकर बाड़मेर ने मान को बढ़ाया !!
सुघोषाघंट जिनालय देख नजरे ना हट पाए !
मयूर मंदिर शत्रुंजय की शान में एक और नजारा !!
सांचौर, बैंगलोर के उत्सव का भूला न पाये नजारा
विक्रमपुर में बिराज रहे मणिधारी गुरुदेव !
खेतासर में जन्में दादा चन्द्रसूरि गुरुदेव !!
सहस अधिक प्रभु प्रतिष्ठा कर किया अमर नाम !
वीर प्रभु के शासन में किया आपने अमर काम !!
इक शत से अधिक को रजोहरण प्रदान किया !
शासन के सिपाही बना आत्म ध्यान में तल्लीन किया !!
प्रतिष्ठा-दीक्षा करवाकर किये शासन के काम !
तप से जोड़ा उपधान करवा किया शासन का नाम !!
ज्ञान ध्यान संयम आराधना से सुशोभित किया जीवन !
तप त्याग साधना से महका ये मधुबन!!
वीतराग वाटिका में महकाए अनेक जीवन!
ज्ञान वाटिका का लक्ष्य बना सुशोभन!!
गुरुदेव का जीवन जैसे सूर्य का प्रकाश है !
गुरुदेव का जीवन जैसे अटल विश्वास है !
गुरुदेव का जीवन जैसे चांद की शीतलता है !!
गुरुदेव का जीवन जैसे सागर की गंभीरता है !।
गुरुदेव का जीवन जैसे सुमन की महक है !!
गुरुदेव का जीवन जैसे सुर और साज है !
गुरुदेव का जीवन जैसे बेजुबा की आवाज है !!
अनेकों संघ छःरी पालित आपकी निश्रा में चले है!
मोकलसर से पालीताणा और चितलवाना से चले है!!
सांचौर से नाकोड़ा और शंखेश्वर चितलवाना से चले है!
राजनगर से शंखेश्वर सैकड़ों भक्त चले है!!
के यूप के ऐतिहासिक संघ से हजारों यात्री जुड़े है!
जन्म भूमि और गौरव वर्ष में संघ सभी जुड़े है!!
शंखेश्वर से पाटन महातीर्थ अमर संघ निकला है!
धन्य हो गए अणहिलपुर में पहला संघ निकला है!!
आज खरतरगच्छाधिपति का जन्म दिवस आया है !
खरतरगच्छ के मणि का अवतरण दिवस आया है !!
अवंती तिर्थोद्धारक को पाकर जन मानस हरखाया है!
बधाई बधाई बधाई गुरुदेव नभ में ये नारा छाया है!!
आशीष सदा रहे शीश पर ये है अंतरकामना!
मणि गुरु मणिधारी बने ये है अंतरकामना!!

बोधप्रद कथा

# उत्तराधिकारी

प्रस्तुति : गौतम बी. संकलेचा

किसी राज्य में एक पराक्रमी राजा का शासन था। उसकी कोई संतान नहीं थी। ढलती उम्र के कारण राज्य के भावी उत्तराधिकारी को लेकर वह अत्यंत चिंतित था। अनेक वैद्यों को दिखाने के बाद भी वह संतान सुख से वंचित ही रहा। अंततः उसने राज्य के ही किसी योग्य नवयुवक को राज्य की बाग-डोर सौंप देने का निश्चय किया।

भावी उत्तराधिकारी के चयन हेतु उसने योग्यता परीक्षण का आयोजन किया। इस हेतु एक शानदार महल का निर्माण करवाया गया। महल के दरवाजे पर गणित का एक समीकरण अंकित कर पूरे राज्य में घोषणा कर दी गई कि राज्य के सभी नवयुवक महल का दरवाजा खोलने हेतु आमंत्रित हैं। दरवाजे पर अंकित समीकरण हल कर दरवाजा खोलें। जो दरवाजा खोलने में सफल होगा, उसे महल उपहार स्वरूप प्रदान किया ही जायेगा और साथ ही राज्य का उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया जायेगा।

घोषणा के दिन से ही उस नव-निर्मित महल में नवयुवकों का तांता लग गया। सुबह से लेकर शाम तक नवयुवक वहाँ आते और दरवाजे पर अंकित गणित के समीकरण को हल करने का प्रयास करते। किंतु आश्चर्य की बात थी कि कोई भी उसे हल नहीं कर पा रहा था। कई उसे लिखकर या याद करके जाते और घर पर उसका हल निकालने का हर संभव का प्रयास करते किंतु फिर भी असफल रहते।

कई दिन बीत गए। राज्य के बड़े से बड़े गणितज्ञ भी उस समीकरण का हल निकाल पाने में असमर्थ रहे। तब राजा ने दूसरे राज्यों के गणितज्ञों को आमंत्रित किया। दूसरे राज्य के गणितज्ञ आये और गणित का वह समीकरण हल करने लगे। जैसे-जैसे दिन ढलता गया, एक-एक करके गणितज्ञ वहाँ से जाते गए। अंत में मात्र तीन लोग शेष बचे। उनमें से दो दूसरे राज्य के गणितज्ञ थे तो तीसरा गाँव का एक साधारण सा युवक था।

दोनों गणितज्ञ जहाँ गणित का समीकरण हल करने में लगे हुए थे, वहाँ युवक एक कोने में खड़ा होकर उन्हें देख रहा था। राजा ने जब उसे यूं ही खड़ा देखा, तो पास बुलाकर पूछा- तुम दरवाजे पर अंकित समीकरण हल क्यों नहीं कर रहे?

युवक बोला- महाराज! मैं तो बस यूं ही इन नामी-गिरामी गणितज्ञों को देखने आया हूँ। ये अपने राज्यों के इतने बड़े गणितज्ञ हैं। इन्हें समीकरण हल करने दीजिये। यदि इन्होंने हल निकाल लिया तो राज्य के उत्तराधिकारी बन जायेंगे। इससे बड़ी खुशी की बात और क्या होगी? यदि ये समीकरण हल नहीं कर कर पाए तब मैं कोशिश करके देखूंगा।

इतना कहकर युवक एक कोने में बैठकर गणितज्ञों को देखने लगा। पूरा दिन निकल गया और शाम घिर आई। किंतु दोनों गणितज्ञ समीकरण हल नहीं कर पाए। उनके मस्तिष्क में पूरे दिन मात्र एक ही प्रश्न घूम रहा था कि आखिर इस समीकरण में ऐसा भी क्या है? कैसे ये हल होगा? कैसे महल का ये दरवाजा खुलेगा?

पूरा प्रयास करने के बाद भी वे समीकरण हल नहीं कर पाए। जब उन्होंने हार मान ली तो कोने में बैठा युवक उठकर दरवाजे के पास गया और जाकर उसे धीरे से धक्का दे दिया। जैसे ही उसने दरवाजे को धक्का दिया, दरवाजा खुल गया।

दरवाजा खुलते ही लोग उससे पूछने लगे कि तुमने ऐसा क्या किया कि महल का दरवाजा खुल गया। युवक बोला- जब मैं बैठकर सबको गणित का समीकरण हल करते देख रहा था तो मेरे दिमाग में विचार आया कि हो सकता है कि दरवाजा खोलने का कोई समीकरण ही न हो। इसलिये मैं गया और सबसे पहले जाकर दरवाजे को धक्का दे दिया। दरवाजा खुल गया। दरवाजे खोलने का कोई समीकरण था ही नहीं।

उसका उत्तर वहाँ उपस्थित राजा ने भी सुना और बहुत प्रसन्न हुआ। उसने युवक को वह महल भी दिया और

(शेष पृष्ठ 13 पर)

जन्मदिवस बधाई

# खरतरगच्छाधिपति का बधाई

कर वन्दन अरजी कहूं, मणिप्रभजी गुरु मान ।।
हरख बधाई हेत री, जनम दिवस की जान ।।1।।
सहस दोय सोलह संवत, पख ऊजळ परमाण ।।
आप जगत में आविये, जनम सुधारण जांण ।।2।।
पारसमल घर पाकियो, पूत गुणी परमाण ।।
आप जगत में आविये, जनम सुधारण जांण ।।3।।
रंग जनेता रोहिणी, पूत जायो प्रवेण ।।
आप वधारण ओपमा, वदे सत्य नित वेण ।।4।।
कुळ लुंकड़ उज्वल कियो, जनम लेय घर जेह ।।
धिन हो मोकळसर धरा, तात मात धिन तेह ।।5।।
जग मांहि महावीरजी, दियो जिका उपदेश ।।
धिन्न गुरू सिर धारियो, भल पहने तन भेष ।।6।।
अनन्त सागर आप हो, दया तणा गुरुदेव ।।
जीवां तारण जगत में, भल ओपे तव देश ।।7।।
साहित लेखन सांतरो, हरखे लिखे हमेश ।।
दया धरम हित देत हैं, आप सदा उपदेश ।।8।।
व्याकरण गुण जांणे वळे, लिखे ज्ञान रा लेख ।।
आप तणा उपदेश सूं, दुनिया सुधरे देख ।।9।।
अमरत वाणी आपरी, हर जन सुण हरखाय ।।
आया शरणे आपरी, प्राणी सह सुख पाय ।।10।।

**-संघवी लाधमलजी मावाजी मरडिया परिवार-चितलवाना**

**पूज्य गुरूदेव श्री खरतरगच्छाधिपति**

**श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा.**

**को**

**जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं**

**फाल्गुन सुदि 14**

**वंदनकर्त्ता**

***Sha Vijayraj ji, Mahendrakumar ji, Chandraguptaraj ji,***

***C.A. Kumarpal ji, Ankith ji, Jinesh ji, Sidharth ji, Dhanpal ji, Shresth ji, Naval ji, Dhiyansh ji, Sonit ji, Katariya***

(शेष पृष्ठ 12 का)

**उत्तराधिकारी**

राज्य का भावी उत्तराधिकारी भी घोषित किया।

मित्रों! जिंदगी में हम कई बार ऐसी परिस्थिति में फंस जाते हैं, जब हमें लगता है कि हमारे सामने पहाड़ जैसी समस्या है। जबकि वास्तव में कोई समस्या होती ही नहीं या होती भी है तो बहुत ही छोटी सी। लेकिन हम उसे बहुत बड़ा बनाकर उसमें उलझे रहते हैं। बाद में उस समस्या का समाधान अपने आप ही निकल जाता है या फिर थोड़े से प्रयास के बाद। तब हमें अहसास होता है कि इतनी सी समस्या के लिए हमने कितना समय बर्बाद कर दिया। समस्या सामने आने पर विचलित न हो। शांति से सोचे और फिर समाधान करने का प्रयास करें।

# दीक्षा समारोह समिति का गठन
# संघवी विजयराजजी डोसी संयोजक बने

जहाज मंदिर 10 फरवरी। पालीताना महातीर्थ की पावन धरा पर सामूहिक दीक्षाओं के आयोजन की व्यवस्था के संदर्भ में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में अ.भा. जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा एवं श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी की बैठक जहाज मंदिर में ता. 10 फरवरी 2021 को आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता महासभा के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढ़ा ने की।

सभी ने इस ऐतिहासिक अवसर को यादगार बनाने का भाव व्यक्त किया। एक श्रावक ने महोत्सव का संपूर्ण लाभ लेने का भाव व्यक्त किया। बैठक में तय किया गया कि इस समारोह का लाभ सकल श्री संघ को मिलना चाहिये।

इस समारोह का नाम 'सुविहित उत्सव' रखा गया। परस्पर विचार विमर्श कर व्यवस्थाओं का उत्तरदायित्व विभिन्न सदस्यों को सौंपा गया।

संयोजक संघवी श्री विजयराजजी डोसी के नाम की घोषणा ब्यावर में पूज्य गुरुदेवश्री ने की थी। व्यवस्था का उत्तरदायित्व सम्हालने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों से सह संयोजक बनाये जायेंगे। जिनके नामों की घोषणा शीघ्र की जायेगी। भोजन व्यवस्था का दायित्व बैंगलोर के श्री महेन्द्रजी रांका एण्ड् ग्रुप को सौंपा गया।

टेंट व्यवस्था के लिये श्री दीपचंदजी बाफना तथा हंसराजजी डोसी आदि को दिया गया। वैयावच्च का दायित्व श्री भैरूभाई लूणिया, आवास व्यवस्था बाबुलालजी लूणिया व सुरेश लूणिया आदि को सौंपी गई। वरघोडे की व्यवस्था का दायित्व के केयुप को सौंपा गया। पूरे समारोह को केयुप का पूर्ण सहयोग प्राप्त रहेगा। प्रचार-प्रसार का दायित्व श्री पदमजी टाटिया को दिया गया।

संयोजक संघवी विजयराजजी डोसी ने सभी को निवेदन किया कि इस महोत्सव को सफल बनाने के लिये सभी को एकजुट होकर सफल पुरुषार्थ करना है।

## श्री जिनहरि विहार के नये भवन का उद्घाटन 3 मई को

पालीताना 11 फरवरी। पूज्य गुरुदेव अर्वति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में जहाज मंदिर में ता. 11 फरवरी 2021 को श्री जिनहरि विहार ट्रस्ट की सभा हुई। जिसकी अध्यक्षता संघवी श्री विजयराजजी डोसी ने की।

बैठक में तय किया गया कि पालीताना में सामूहिक दीक्षाओं का पावन अवसर उपस्थित है। इस वातावरण में श्री जिनहरि विहार में जो नया भवन बना है, उसका उद्घाटन रखा जावे। इस नये भवन का उद्घाटन 3 मई 2021 को करना निश्चित किया गया। पांच मंजिला बने इस भवन में 51 वातानुकूलित कक्ष, विशाल उपाश्रय, प्रवचन हॉल, पुस्तकालय तथा विशाल भोजनशाला का निर्माण किया गया है। इस भवन के निर्माण में अध्यक्ष संघवी विजयराजजी डोसी, मंत्री बाबुलालजी लूणिया, श्री दीपचंदजी बाफना का बहुत पुरुषार्थ रहा है। ट्रस्ट के अध्यक्ष संघवी श्री विजयराजजी डोसी ने बताया कि उद्घाटन के अवसर पर समस्त लाभार्थी परिवारों का बहुमान किया जायेगा। उद्घाटन समारोह की व्यवस्था के लिये श्री दीपचंदजी बाफना को संयोजक बनाया गया।

# श्री खरतरगच्छ में गणी पदों की घोषणा

जहाज मंदिर 25 फरवरी। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने समुदाय के छह मुनियों को गणी पद प्रदान करने की उद्घोषणा ता. 25 फरवरी को की। पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री सम्यग्रत्नसागरजी म., पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मनीषसागरजी म. एवं पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. को गणी पद से विभूषित किया जायेगा।

पालीताना में आयोजित हो रहे दीक्षा महोत्सव में ता. 7 मई 2021 को मुनिजनों को गणी पद प्रदान किया जायेगा।

पदों की घोषणा से गच्छ में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई।

# गुणायाजी तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु सभा

जहाज मंदिर 26 फरवरी। अनंत लब्धिनिधान, परमात्मा महावीर के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी की केवलज्ञान भूमि श्री गुणायाजी तीर्थ का जीर्णोद्धार पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में प्रारंभ होने जा रहा है।

इस हेतु श्री गुणायाजी तीर्थ जीर्णोद्धार समिति की बैठक जहाज मंदिर में पूज्य आचार्यश्री की पावन निश्रा में ता. 26 फरवरी 2021 को आयोजित की गई। इस बैठक में पावापुरी तीर्थ के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमारसिंहजी पारसान कोलकाता, मंत्री श्री शांतिलालजी बोथरा कोलकाता, श्री सुभाषचंदजी बोथरा रांची, श्री श्रीपालजी भांडिया कोलकाता, जीर्णोद्धार संयोजक संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा बैंगलोर एवं श्री महावीरचंदजी मेहता बैंगलोर उपस्थित थे।

बैठक में श्री महावीरचंदजी मेहता ने अब तक की प्रगति बताते हुए कहा कि श्री गुणायाजी तीर्थ का सर्वेक्षण हो गया है। अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध आर्किटेक्ट द्वारा मास्टर प्लान बनाया गया है। आर्किटेक्ट ने मास्टर प्लान को स्क्रीन पर प्रस्तुत किया। इस मास्टर प्लान में सामान्य संशोधनों का सुझाव दिया गया।

पूज्यश्री ने कहा कि जीर्णोद्धार कार्य को प्रारंभ करने का शुभ मुहूर्त्त अप्रेल महिने में आयेगा। बैठक में यह तय किया गया कि जीर्णोद्धार हेतु एक विशाल कार्यसमिति का गठन किया जाय, जिसमें पूरे भारत के योग्य श्रेष्ठीजनों को सम्मिलित किया जावे।

# चातुर्मास विनंती

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा को श्री शंखेश्वर महातीर्थ दादावाड़ी में चातुर्मास की विनंती की गई।

श्री शंखेश्वर दादावाड़ी संस्थान के अध्यक्ष संघवी वंसराजजी भंसाली एवं ट्रस्ट मंडल ने जहाज मंदिर में बिराजमान पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री से सन् 2021 के चातुर्मास की विनंती की।

श्री भंसालीजी व मार्गदर्शक संघवी तेजराजजी गुलेच्छा ने शंखेश्वर की महिमा का वर्णन करते हुए भव्य सामूहिक चातुर्मास की विनंती की। पूज्य गच्छाधिपति श्री ने देश-काल अनुसार यथासमय निर्णय करेंगे ऐसा फरमाया।

# बालोतरा में प्रतिष्ठा संपन्न

बालोतरा 20 फरवरी। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनिश्री मयंकप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया महत्तरा श्री चम्पा-जितेन्द्र विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या साध्वी श्री हेमरत्ना श्रीजी म. पू. नूतनप्रिया श्रीजी. पू. तत्त्वज्ञलता श्रीजी म. पू. पर्वप्रभा श्रीजी म. आदि साधु-साध्वी मडंल की पावन निश्रा में बालोतरा नगर में जीर्णोद्धारित प्राचीन श्री शांतिनाथजी मंदिर की प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद हर्षोल्लास के साथ माघ सुदि 8 शनिवार ता. 20.02.21 को संपन्न हुई।

श्री ओसवाल सकल श्री संघ के तत्त्वावधान में श्री विमलनाथ जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस प्रतिष्ठा समारोह का प्रारंभ माघ सुदि 6 गुरुवार ता. 18 फरवरी को कुंभ स्थापना, दीप स्थापना आदि विविध पूजा विधानों द्वारा हुआ। ता. 19 फरवरी को शोभायात्रा का आयोजन हुआ। इस शोभायात्रा में तीन मुमुक्षुओं का वरघोडा भी सम्मिलित था।

वरघोडे के पश्चात् मुमुक्षु महावीर बोहरा, सुश्री सोना मालू व सुश्री मुस्कान बोहरा का श्री संघ व खरतरगच्छ श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया।

ता. 20 फरवरी को प्रातः मंगल मुहूर्त में परमात्मा की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। ध्वजा का अमर लाभ श्री चंपालालजी गौतमचंदजी राजेन्द्रकुमारजी लूणिया परिवार ने लिया। कलश का लाभ श्री मेवारामजी आनंदकुमारजी नरेशकुमारजी मेहता ने लिया। श्री शांतिनाथ परमात्मा को बिराजमान करने का लाभ श्रीमती पानी देवी बच्छराजजी चोकसी परिवार ने लिया।

इस प्राचीन मंदिर में परमात्मा शांतिनाथ, श्री अभिनंदन स्वामी, सुपार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा बिराजमान की गई। साथ ही ह्रींकार में रत्नमयी लघु प्रतिमा भी प्रतिष्ठित की गई। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि आदि दादा गुरुदेवों के प्राचीन पगले, नाकोडा भैरव, पद्मावती देवी की प्रतिष्ठा की गई। दोपहर में शांति स्नात्र महापूजन पढाया गया।

पूज्य गुरुदेव श्रीने बताया कि खरतरगच्छ की ही भावहर्ष शाखा का यह उपाश्रय है। जिसमें प्राचीन मंदिर है। उसी मंदिर का अल्प समय में जीर्णोद्धार किया गया।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री कांतिलालजी मेहता, उपाध्यक्ष श्री अमृतलालजी कटारिया आदि समस्त ट्रस्टियों व सकल श्रीसंघ का अनुमोदनीय पुरुषार्थ रहा। ता. 21 को द्वारोद्घाटन के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

# रायपुर (छ.ग.) में दादावाडी का निर्माण प्रारंभ

रायपुर 21 फरवरी। श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट सदर बाजार, रायपुर (छ.ग.) के तत्वावधान में रायपुर नगर एम.जी.रोड स्थित दादाबाड़ी प्रांगण में श्री जिनकुशल दादाबाड़ी का प्रथम पाषाण स्थापना महोत्सव अत्यंत हर्ष के साथ हुआ।

पू. अध्यात्मयोगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. युवामनीषी पू. श्री मनीषसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में 20 फरवरी 2021 को सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व सदर मंदिर से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। महोत्सव में जिनमंदिर व दादाबाड़ी से संबंधित मूर्ति भराने के नकरों का अनावरण किया गया।

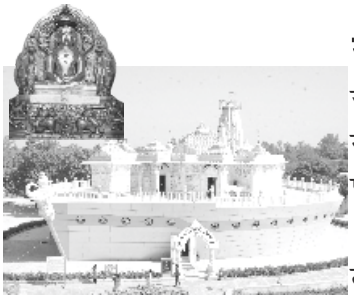

# जहाज मंदिर में वर्षगांठ मेला

जहाज मंदिर 26 फरवरी। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक जहाज मंदिर प्रतिष्ठा की 22वीं वर्षगांठ अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ 26 फरवरी 2021 माघ सुदि 14 को मनाई गई।

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्री पारसमलजी अंकितकुमारजी छाजेड परिवार की ओर से श्री शांतिनाथ परमात्मा के मुख्य शिखर पर की मुख्य ध्वजा चढाई गई। साथ ही दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. के शिखर पर ध्वजा सांचोर निवासी शा. प्रकाशमलजी छगनलालजी कानुंगो बोथरा द्वारा एवं इसी प्रकार दादावाडी, गुरुमंदिर, मणिधारी मंदिर, सर्वगच्छ गुरुमंदिर आदि की ध्वजाऐं चढाई गई। इस पावन अवसर पर श्री गुणायाजी तीर्थ ट्रस्ट मंडल, श्री प्रकाशजी कानुंगो सहित अनेक यात्रिकों का आवागमन रहा।

# राणी गाँव बाड़मेर में जाजम मुहूर्त्त

राणी 21 फरवरी। बाड़मेर-चौहटन रोड पर स्थित राणी गाँव में करीब 61 वर्ष पहले पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के करकमलों से श्री सुमतिनाथ प्रभु जिनालय की भव्य प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी।

चार वर्ष पू. ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. (तत्कालीन उपाध्याय)ने श्री सुमतिनाथ जिनालय की जीर्ण स्थिति देखकर संघ को जिर्णोद्धार करवाने की प्रेरणा दी। जीर्णोद्धार का कार्य अंतिम चरण में है। शीघ्र ही इस नवनिर्मित जिनालय में श्री सुमतिनाथजी व दादागुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी की चरण पादुका गादीनसिन होंगे। 16 जून 2021 को पूज्य गुरुदेव की निश्रा में भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी।

इस हेतु जाजम मुहूर्त की बोलियां पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 21 फरवरी को बोली गई। जिसमें अनेक लाभार्थियों ने उल्लास के साथ लाभ लिया।

# अवंति तीर्थ प्रतिष्ठा विशेषांक का विमोचन

जहाज मंदिर 26 फरवरी। विश्व विख्यात उज्जैन स्थित जीर्णोद्धारित प्राचीन श्री अवंति तीर्थ की प्रतिष्ठा पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब की प्रभावक निश्रा एवं मार्गदर्शन में विशिष्ट भव्यता के साथ दो वर्ष पूर्व संपन्न हुई थी। इस जीर्णोद्धार में मूलनायक प्रभु का उत्थापन नहीं किया गया था। 'श्वेतांबर जैन' द्वारा प्रकाशित अवंति तीर्थ प्रतिष्ठा महोत्सव का विशेषांक का विमोचन जहाज मंदिर में दिनांक 26 फरवरी को गणमान्य सज्जनों द्वारा किया गया।

# दीक्षा मुहूर्त्त प्रदान

जहाज मंदिर 5 फरवरी। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 5 फरवरी 2013 को मुमुक्षु अनुराग राजेन्द्रकुमारजी भंसाली (फलोदी निवासी) को संयम ग्रहण का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया गया।

भंसाली परिवार ने जहाज मंदिर में चतुर्विध श्रीसंघ की साक्षी में मुमुक्षु को दीक्षा की अनुमति प्रदान की।

मुमुक्षु अनुराग भंसाली ने अपने भावों को व्यक्त करते हुए शीघ्र मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की, जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने 6 मई 2021 का शुभ मुहूर्त प्रदान किया। इस से पूर्व 8 मुमुक्षुओं को मुहूर्त्त प्रदान किया जा चुका है।

ता. 20 फरवरी को बालोतरा में सुश्री माधुरी कंकु चौपड़ा (सिवाणा निवासी) को शुभ मुहूर्त प्रदान किया गया। इस अवसर पर चौपडा परिवार ने व मुमुक्षु ने पूज्य गच्छाधिपतिश्री से मुहूर्त प्रदान करने की विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने 6 मई 2021 का मुहूर्त प्रदान किया।

# जहाज मंदिर में दीक्षा मुहूर्त्त उद्घोषणा

जहाज मंदिर 25 फरवरी। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में जहाज मंदिर में ता. 25 फरवरी 2021 को सात मुमुक्षुओं को सुविहित उत्सव के अन्तर्गत प्रव्रज्या का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया गया।

चौहटन निवासी मुमुक्षु रजत सेठिया, मुमुक्षु शुभम् सिंघवी, रायपुर निवासी श्रीमती पुष्पाजी बैद, झाब-मुंबई निवासी सुश्री नीलिमा भंसाली, पादरू निवासी सुश्री रुचिका संकलेचा, चौहटन निवासी मुमुक्षु रविना सेठिया, सायला निवासी मुमुक्षु डिम्पल श्रीश्रीमाल को पालीताना में 6 मई 2021 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया गया।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने संयम की महिमा बताते हुए कहा- खरतरगच्छ के इतिहास में 130 वर्ष पूर्व आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी म. की निश्रा में बीकानेर नगर में 23 साधुओं की दीक्षा हुई थी। उसके पश्चात् छह से अधिक सामूहिक दीक्षाओं का इतिहास नहीं मिलता। उन्होंने कहा- अभी तक 10 मुमुक्षुओं को मुहूर्त्त प्रदान किया जा चुका है। आज सात मुमुक्षुओं को दिया जायेगा। 18वां मुहूर्त्त 3 मार्च को तिलोडा में दिया जायेगा।

130 वर्षों पश्चात् एक नये इतिहास का सर्जन होने जा रहा है। एक साथ 18 दीक्षाओं का महाविधान संपन्न होगा। खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी के वातावरण में यह अनूठा आयोजन होगा।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा– सभी को अनुमोदना का अनूठा लाभ लेना है। पृथ्वीचंद्र गुणसागर का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा– मात्र अनुमोदना करके राजा ने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया।

मुहूर्त्त प्रदान करने से पूर्व सभी मुमुक्षुओं का श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट द्वारा बहुमान किया गया। मुमुक्षुओं के भावभरे वक्तव्यों को श्रवण कर सारी जनता भावविभोर हो उठी। मुमुक्षुओं ने अपने अन्तर के भावों को अभिव्यक्त करते हुए कैसे संयम के भाव जागृत हुए, इसका वर्णन किया। इस अवसर पर बडी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

# दीक्षा दिवस मनाया गया

**बालोतरा १६ फरवरी।** पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में ता. 16 फरवरी 2021 को पूज्यश्री के शिष्य पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. के संयम जीवन के 18 वर्ष पूर्ण होकर 19वें वर्ष प्रवेश पर अभिवदंना समारोह का आयोजन किया गया। यह आयोजन बालोतरा नगर के श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ रणुजा धाम तीर्थ पर तीर्थ निर्माता बी.एन. लूंकड़ परिवार की ओर से किया गया। इस अवसर पर संगीतकार श्री अनिल सालेचा, सुश्री कोमल गुलेच्छा आदि ने भक्ति संगीत से संयम अनुमोदना की।

साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी म., श्री अमृतलालजी कटारिया संघवी और केयुप बालोतरा के मंत्री अभिषेक गुलेच्छा ने वर्धापना देते हुए शुभकामनाऐं प्रस्तुत की।

पूज्य आचार्यश्री ने मंगल आशीर्वाद देते हुए अपने अनुभव सुनाये। गुरुदेवश्री ने कहा- मुनि मेहुलप्रभ ने हर क्षेत्र में अनुमोदनीय प्रगति की है। संस्कृत पठन-पाठन के साथ, प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के संशोधन के शासनोपयोगी, गच्छोपयोगी कार्य कर रहे हैं।

पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी ने कहा जिनशासन व मुनि पद को पाकर मेरा जीवन धन्य हुआ है। गुरुदेवश्री की कृपा से ही मेरा जीवन प्रगति के पथ पर है।

**बालोतरा १८ फरवरी।** पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी शिष्य पूज्य मुनिश्री मयूखप्रभसागरजी म. के संयम जीवन के 2 वर्ष पूर्ण होकर तीसरे वर्ष के मंगल प्रवेश के पावन अवसर पर प्रवचन का आयोजन किया गया।

पूज्य आचार्य श्री ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा- उत्तम संयम वेश मिला है। इसे पूर्ण रूप से सार्थक करना हैं उन्होंने कहा- इसकी प्रज्ञा व प्रतिभा पर हमें गर्व है। खूब आगे बढ़े, यह मंगल कामना है।

पू. मुनि मयूखप्रभसागरजी ने कहा- मेरा जीवन धन्य हुआ है कि मुझे जिन शासन व खरतरगच्छ मिला! व गुरु महाराज की परम शरण मिली।

उन्होंने कहा- परिवार की बहुत अनुमोदना करता हूँ जिन्होंने अपनी इच्छाओं का त्यागकर मेरी भावना का सम्मान कर दीक्षा की आज्ञा प्रदान की। पूज्यश्री का आशीर्वाद ही मेरे भविष्य का कवच है।

**मुंबई ७ फरवरी।** पूज्या साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी पर्वप्रभाश्रीजी म. के संयम जीवन के प्रथम वर्ष पूर्णाहूति के अनुमोदनार्थ मुंबई में श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ सांचौर के तत्वावधान में विल्सन गली स्थित श्री शांतिनाथ जिनालय में श्री वीर तत्त्व युवा मंडल मुंबई द्वारा स्नात्र पूजा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंडल के अनेक युवक उपस्थित थे।

# बालाघाट भव्य दीक्षा महोत्सव

बालाघाट 22 फरवरी। बालाघाट नगर में पू. खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. साम्राज्ये पू. आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में चतुर्विध संघ की साक्षी मे 2 दीक्षा संपन्न हुई। दोनों दीक्षार्थी अष्टापद तीर्थ प्रेरिका, वर्धमान तपाराधिका जिनशिशु पू. साध्वी श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.की सुशिष्याएँ बनी। श्रीमती कंचनदेवी कोचर बनी पू. साध्वी कृपानिधि श्री म.सा. एवं कु. क्षमा बोथरा बनी पू.साध्वी कर्त्तव्यनिधिश्रीजी म.सा.।


**फार्म - 4 ( नियम 8 देखिए )**

| | | |
|---|---|---|
| 1. प्रकाशक स्थान | – | माण्डवला, जिला जालोर (राज.) |
| 2. प्रकाशन अवधि | – | मासिक |
| 3. मुद्रक का नाम | – | डॉ. यू. सी. जैन |
| (क्या भारत का नागरिक है?) | – | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | – | नहीं |
| पता | – | जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर |
| 4. प्रकाशक का नाम | – | डॉ. यू. सी. जैन |
| (क्या भारत का नागरिक है?) | – | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | – | नहीं |
| पता | – | जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर |
| 5. सम्पादक का नाम | – | डॉ. यू. सी. जैन |
| (क्या भारत का नागरिक है?) | – | हाँ |
| (यदि विदेशी है तो मूल देश) | – | नहीं |
| पता | – | जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर |
| 6. उनके नाम व पते जो समाचार पत्रें के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों। | – | श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला, जिला-जालौर (राज.) |

मैं डॉ. यू. सी. जैन, जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर (राज.) द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

**डॉ. यू. सी. जैन**
**प्रकाशक के हस्ताक्षर**

दिनांक : 05-03-2021



## नवनिर्मित तीर्थों व दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिये

**श्री विक्रमपुर (राज.)**

**द्वितीय दादा गुरूदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (हाल में बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शन पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के अलग उपाश्रय तथा अतिथिगृह जिसमें एअरकंडीशनर व फर्नीचरयुक्त कमरे, डोरमेट्री की सुविधा प्राप्त है तथा यह फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर, फलोदी, बीकानेर हाड़वे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।**

*Administrotor*
**Shri Dharmendra Khajanchi**
Bikaner (Raj.) Mo.: 9413211739

मुनीम श्री प्रशान्त शर्मा, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305 ( जि. बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635, 9001426345-पेढ़ी

**श्री खेतासर (राज.)**

**चतुर्थ दादागुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्म स्थली खेतासर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय तथा चतुर्थ गुरूदेव की दादाबाड़ी के दर्शन-वंदन व पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के उपाश्रय तथा अतिथिगृह फर्निचरयुक्त कमरे की सुविधा प्राप्त है। यहाँ भोजनशाला की सुविधा है मगर हर रोज भोजनशाला चालू नहीं है। यहाँ पधारने के लिये जोधपुर, ओसिया, तिंवरी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान ओसियां तीर्थ से 10 किमी. तथा जोधपुर से 65 किमी. पर है।**

Administrotor श्री बाबूलालजी टाटिया
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 9928217531

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 74250062227

**श्री सिद्धपुर पाटन (गुज.)**

**खरतरगच्छ की जन्मस्थली पाटन नगर में सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में भवन का निर्माण किया गया है। यहां पर साधु-साध्वी भगवतों के रूकने, स्वाध्याय व पठन-पाठन के लिए सुविधायुक्त भवन है। कृपया जब भी साधु-साध्वी भगवंत पाटन पधारे तो इस सुविधा का उपयोग जरूर करें।**

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, पाटन (गुज.)

Ex. Trustee: **Shri Deepchandji Bafna**
Ahmedabad (Guj.) Mo. 9825006235

श्री राकेश भाई मो. 9824724027

# चंपावाडी जैन मंदिर की २०वीं वर्षगांठ संपन्न

सिवाना 14 फरवरी। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की जन्म स्थली श्री सिवाना में चंपावाडी जैन मंदिर की 20वीं वर्षगांठ हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ चंपाश्रीजी स्मारक ट्रस्ट के तत्वावधान चंपावाडी परिसर में आयोजित समारोह के तहत प्रातः खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का प्रवेश हुआ। तत्पश्चात् जिनमंदिर दादावाड़ी और गुरु मंदिर के कायमी ध्वजारोहण के लाभार्थी परिवारों, नवकारसी भोजन के लाभार्थी परिवारों का ट्रस्ट मंडल की ओर से स्वागत किया गया। नवनिर्मित स्वागत कक्ष और जिनकुशलसूरि प्रवासी भवन का लोकार्पण आचार्य प्रवर की निश्रा में किया गया।

समारोह के पांडाल में जिनमंदिर के वार्षिक चढावे की बोलियां बोली गई और चढ़ावे की बोली के लाभार्थियों, नवनिर्मित स्वागत व जिनकुशलसूरि प्रवासी भवन के लाभार्थी परिवारों का ट्रस्ट मंडल की ओर से बहुमान किया गया।

इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य प्रवर ने महत्तरा श्री चंपाश्रीजी के दिव्याशीष से चंपावाडी परिसर की दिन दुगनी और रात चौगुनी हो रही प्रगति बताते हुए इसमें ट्रस्ट मंडल के फाउंडर व वर्तमान ट्रस्टियों के योगदान और परिश्रम व सेवा भावना की प्रशंसा की।

पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने जननी और जन्मभूमि की गरिमा बतलाते हुए आत्मिक उत्थान हेतु श्रुतज्ञान में प्रगति का उपदेश दिया। स्थानकवासी श्रमण संघ के हितेश मुनि, प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी, साध्वी विमलप्रभाश्रीजी, साध्वी कल्पलताश्रीजी म. आदि ने भी गुरु के प्रति निष्ठा और धर्म के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा दी। विजय मुहूर्त में अमर ध्वजा के लाभार्थी परिवार के सदस्यों ने संगीत की स्वरलहरियों और मंत्रोच्चार के साथ जिनमंदिर, दादावाडी और गुरु मंदिर के शिखर पर जय जयकारो की ध्वनि के साथ ध्वजारोहण किया। नवकारसी के लाभार्थी छाजेड़ परिवार का चंपावाडी ट्रस्ट मंडल की ओर से बहुमान किया गया।

# अनुभव स्मारक में मुमुक्षु का बहुमान

पाली 1 मार्च। अनुभव स्मारक में सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री साध्वी हेमप्रभाश्रीजी म.सा की विदुषी शिष्या साध्वी कल्पलताश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा एवं साध्वी अमितयशाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में दीक्षार्थी बहिन सुश्री नीलिमा भंसाली का दि. 1 मार्च को अनुभव स्मारक में अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुमुक्षु नीलिमा ने अपने दीक्षा के भावों को अभिव्यक्त किया। इस प्रसंग पर अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

– रतनलाल धारीवाल

# पादरु में मुमुक्षु सुश्री रुचिका का अभिनंदन

पादरु 26 फरवरी। मातुश्री मोहिनी देवी-भवरलालजी संकलेचा की पौत्री मुमुक्षु रुचिका संकलेचा के दीक्षा मुर्हूत घोषणा के बाद 26 फरवरी को अपने पैतृक गांव में वर्षीदान का वरघोड़ा निकाला गया। वरघोड़ा पादरु गाँव के सभी गलियों से होते हुए पादरु दादावाड़ी पहुंचा जहां पर दादावाड़ी ट्रस्ट ने मुमुक्षु व उसके दादीमाँ व माता पिता का अभिनंदन किया।

पादरु दादावाड़ी ट्रस्ट अध्यक्ष श्री दिनेशजी छाजेड़ ने संकलेचा परिवार की अनुमोदना की व उसके पश्चात वरघोड़ा पुनः श्री जैन संघ पादरु की मुख्य धर्मशाला में पहुंचा जहाँ मुमुक्षु व उसके परिजनों का अभिनंदन समारोह रखा गया। अभिनंदन कार्यक्रम में पादरु जैन संघ अध्यक्ष श्री जवेरीलालजी ओसवाल ने संकलेचा परिवार सहित सभी का स्वागत किया।

मुमुक्षु रुचिका के काका श्री गौतमजी संकलेचा ने सकल संघ को रुचिका के दीक्षा दिवस 5 व 6 मई को पालीताना आने का निमंत्रण दिया। उसके पश्चात पादरु जैन संघ द्वारा मुमुक्षु की दादी मोहिनी देवी व माता पिता ललितादेवी व ललितकुमार जी सहित सभी परिजनों का अभिनंदन किया। मुमुक्षु रुचिका ने संयम की महत्ता बताते हुए चारित्र को श्रेष्ठ बताया। दीक्षा निमित्ते संकलेचा परिवार ने 26 फरवरी को दोनों समय नवकारशी का आयोजन किया व दोपहर में पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा पढ़ाई गयी।

इस अवसर पर पादरु जैन संघ के अध्यक्ष श्री जवेरीलालजी ओसवाल, कोषाध्यक्ष जवेरीलालजी कवाड़, दादावाड़ी के अध्यक्ष श्री दिनेशजी छाजेड़, सहकोषाध्यक्ष श्री अशोकजी संकलेचा सहित गाँव के वरिष्ठ सदस्य श्री मूलचन्दजी बाफना, बाबुलालजी बालड़, अमीचंदजी श्रीश्रीमाल, जुगराजजी संकलेचा, भरतजी ओसवाल, हसमुखजी छाजेड़, नरपतजी कटारिया, राजेशजी छाजेड़, प्रवीणजी संकलेचा, वगतावरमलजी बाफना, अशोकजी गोलेच्छा, लूणचंदजी गोलेछा, बाबुलालजी बाफना, प्रवीण बाफना, सुमेरमलजी गोठी, विजय बालड़, नागराज बाफना, महावीर मरडिया सहित गांव के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

-अशोक संकलेचा पादरु-हैदराबाद

# कारोलानगर में जिन मंदिर, दादावाड़ी प्रथम वर्षगाँठ सम्पन्न

कारोला 13 फरवरी। कारोलानगर में श्री नमिनाथ जिन मंदिर, दादा श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी एवं अम्बिका देवी मंदिर की प्रथम वर्षगाँठ पू. साध्वी सुरंजनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी मित्रांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में मंगल व उल्लास के साथ माघ सुदि 2 शनिवार 13.2.2021 को मनाई गई। ध्वजा के उपलक्ष में 18 अभिषेक एवं सतरह भेदी पूजा विधि विधान किया गया।

जिनकुशलसूरि आराधना भवन का खनन मुहूर्त- कारोला 19 फरवरी। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से दिनांक 19.2.2021 माघ सुदी 7 को जिनकुशलसूरि आराधना भवन का खनन मुहूर्त संपन्न हुआ।

यह मुहूर्त पू. साध्वी सुरंजनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी मित्रांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में बड़े आनंद व उल्लास के साथ माघ सुदी 7 को सम्पन्न हुआ।

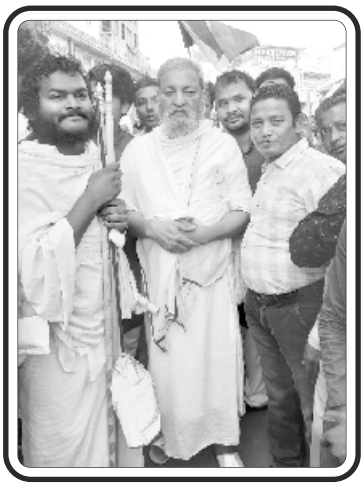

## आ. श्री जिनमनोज्ञसूरिजी का बाड़मेर में भव्य प्रवेश

बाड़मेर 16 फरवरी। आचार्य पदारोहण के पश्चात् प्रथम बार बाड़मेर में पधारे पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा., मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. के नगर प्रवेश पर जैन एवं जैनतर समुदाय ने स्वागत किया। जगह-जगह पर आचार्य भगवंत के स्वागत में गहुंलियां की गई।

इस अवसर पर साध्वी श्री प्रियरंजनाश्री म.सा. आदि ठाणा 3 की भी पावन उपस्थिति रही। शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्ग से होते हुए स्थानीय आराधना भवन पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

जहाँ धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि कोरोना ने अपनी ही मस्ती में जीवन जी रहे लोगों को सिखा दिया कि जीवन सादगी से भी जिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि जैन धर्म तो सदियों से वैज्ञानिक आधार पर ही जीवन जीने की कला सिखाता है।

## केयुप कार्यकारिणी का गठन

वडोदरा 1 मार्च। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद वड़ोदरा शाखा का 01/03/2021 को अरविंदजी मोतीचंदजी झाबक के निवास पर मीटिंग हुई। सभा में 2021- 2022 वर्ष के लिए अध्यक्ष, मानद मंत्री, अन्य कार्यकारिणी एवं सलाहकार समिति का गठन किया गया।

श्री धनपतजी राजमलजी श्रीश्रीश्रीमाल अध्यक्ष पद पर और श्री मुकेशजी मदनचंदजी बाफना मानद मंत्री पद पर चुना गया। सभी को शुभेच्छा एवं आप सभी शासन, संघ एवं समुदाय की सेवा में सदा तत्पर रहेंगे। -अल्पेश मोतीचंदजी झाबक,

## अवंति तीर्थोद्धारकश्री का विहार प्रवास

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा ने बालोतरा नगर में श्री शांतिनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न कराकर ता. 20 फरवरी 2021 को शाम को विहार कर श्री नाकोडा तीर्थ पधारे। वहाँ से ता. 21 फरवरी को शाम को विहार कर जसोल पधारे। वहाँ से सिवाना, मोकलसर, बालवाड़ा होते हुए ता. 24 को शाम को जहाज मंदिर पधारे।

यहाँ से ता. 1 मार्च को विहार कर तिलोडा पधारेगे, वहाँ ता. 3 मार्च को मुमुक्षु सुश्री शिल्पा मुणोत को भागवती दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान करेंगे। वहाँ से विहार कर ता. 6 मार्च तक जहाज मंदिर पधारकर 9 मार्च को विहार करेंगे। पूज्यश्री के जालोर, मांडोली, जीरावला, पालनपुर होते हुए 26 मार्च तक अहमदाबाद पहुँचने की संभावना है। तीन दिन की स्थिरता के पश्चात् पालीताना की ओर विहार करेंगे।

संपर्क सूत्र-

**पूज्य गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.**

द्वारा-श्री बाबुलालजी लूणिया

**श्री महावीर ट्रेडिंग कं.,**

5. श्रेयस एस्टेट, सोनारिया ब्लॉक के सामने, जनरल हॉस्पीटल रोड, बापुनगर, अहमदाबाद-380021 (गुजरात)

मुकेश प्रजापत- 7987151421

# कुशल वाटिका की आठवीं वर्षगांठ सम्पन्न

बाड़मेर 14 फरवरी। बाडमेर-अहमदाबाद रोड पर स्थित कुशल वाटिका प्रांगण में भगवान मुनिसुव्रतस्वामी जिनमन्दिर, दादावाडी, गुरु मंदिर, देवी-देव मन्दिर की आठवीं वर्षगांठ सम्पन्न हुई।

पूज्य खरतगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में पूज्या साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से प्रवर्तिनी प्रमोदश्रीजी म.सा. की स्मृति में बनी कुशल वाटिका के नौ मन्दिरों की आठवीं वर्षगांठ पूज्य खरतगच्छाधिपतिश्री की आज्ञानुवर्तिनी गच्छगणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या मधुरभाषी साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में प्रातः अठारह अभिषेक, सतरह भेदी पूजा, विजय मुहूर्त में शिखर पर लाभार्थी परिवारों द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ ध्वजारोहण किया गया।

मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान की मुख्य ध्वजा भंवरलाल विरधीचन्द छाजेड परिवार हरसाणी वालों की ओर से चढाई गई। इस कार्यक्रम में हजारों श्रद्वालुओं के साथ सकल संघ साक्षी रहा। इसके बाद कुशल वाटिका ट्रस्ट द्वारा नवकारसी का आयोजन किया गया।

-केवलचंद छाजेड

# श्री अवंति तीर्थ की द्वितीय वर्षगांठ

उज्जैन 26 फरवरी। 2600 वर्ष प्राचीन श्री विक्रमादित्य सम्राट के सम्मुख श्री अवंति पार्श्वनाथ प्रभु, जिनको आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकर द्वारा कल्याण मंदिर स्तोत्र की 11वीं गाथा में प्रकट किया था ऐसे प्रभु जिनका जीर्णोद्धार बिना मूर्ति उत्थापन किए सन् 2020 में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब की निश्रा में पूर्ण होकर प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ, की द्वितीय वर्षगांठ उल्लास के साथ मनायी गयी।

अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ त्रिशिखरीय जिनालय के द्वितीय वर्षगांठ पर आयोजित त्रिदिवसीय ध्वजारोहण महोत्सव में शुक्रवार को 8:30 बजे शिप्रा नदी के किनारे से पूज्य पंन्यास श्री विनयकुशल मुनिजी आदि ठाणा, पू. साध्वी प्रभंजनाश्रीजी आदि ठाणाा एवं पू. साध्वी अमीपूर्णाश्रीजी म. के सानिध्य में 1500 श्रावकों के वरघोड़ा के रूप में अवंती तीर्थ पहुंचा जहां पर सतरह भेदी पूजा के बाद मूलनायक भगवान अवंति पार्श्वनाथजी के शिखर पर मुख्य ध्वजा फहराई गई। जिसके लाभार्थी संघवी कुशलराज, उत्तमचंद, ललितकुमार गुलेच्छा मोकलसर-बैंगलोर, श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी शिखर पर कायमी ध्वजा के लाभार्थी फुंगनी (राज.) निवासी हीरालाल, जिया पेढ़ बड़गांव कोल्हापुर, श्री आदेश्वरजी शिखर पर कायमी ध्वजा के लाभार्थी मांगीलाल मालू परिवार चोहटन-सूरत थे। श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक मारवाड़ी समाज ट्रस्ट उज्जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

# साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य **श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी** म.सा. पू. मुनिश्री नयज्ञसागरजी म. ब्रह्मसर से विहार कर बाडमेर होते हुए ता. 20 फरवरी को राणीगांव पधारे। जहाँ ता. 21 फरवरी को उनकी निश्रा में अंजनशलाका प्रतिष्ठा की जाजम का शुभ मुहूर्त्त हुआ। चढावों का एक अनूठा इतिहास रचा गया। राणीगांव के इस मंदिर की प्रतिष्ठा 16 जून 2021 को पूज्यश्री की निश्रा में संपन्न होगी। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री बामणोर पधारे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 25 फरवरी को उपाश्रय का भूमिपूजन संपन्न हुआ।

पूज्य मुनि **श्री मयंकप्रभसागरजी म.** पू. मुनि **श्री मेहुलप्रभसागरजी म.** की पावन निश्रा में

ता. 26 फरवरी को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ रणुजा धाम तीर्थ की पहली वर्षगांठ का आयोजन संपन्न हुआ। अठारह अभिषेक कराये गये। पूजा पढाई गई। इस तीर्थ का निर्माण बालोतरा के लूंकड परिवार बी.एन. परिवार द्वारा किया गया जिसकी प्रतिष्ठा गतवर्ष पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्यश्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में संपन्न हुई थी।

पूज्य मुनिद्वय ने 26 फरवरी को शाम जहाज मंदिर की ओर विहार किया है।

पूजनीया प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा सिवाना से विहार कर जहाज मंदिर पधारे। जहाज मंदिर की वर्षगांठ के आयोजन पश्चात् वे तिलोडा की ओर विहार करेंगे, जहाँ ता. 3 मार्च को प्रव्रज्या मुहूर्त्त प्रदान महोत्सव का आयोजन है। वहाँ से वे पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया गणिनी प्रवरा **श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा ने दोंडाइचा से विहार कर सारंगखेडा, शहादा, तलोदा, वाण्याविहिर होते हुए अक्कलकुआं पधारे। तीन दिनों की स्थिरता के पश्चात् खापर, सेलंभा होते हुए उन्होंने गिरनार तीर्थ की ओर विहार किया है। वे गिरनार होते हुए पालीताना पधारेंगे।

पूजनीया बहिन म. **डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.** आदि ठाणा ने ता. 18 जनवरी 2021 को बैंगलोर से पालीताना की ओर विहार किया है। वे हुबली होते हुए इचलकरंजी पधारे। जहाँ तीन दिनों की स्थिरता के पश्चात् मल्हारपेठ की ओर विहार किया है। जहाँ उनकी निश्रा में ता. 3 मार्च को जिन मंदिर की वर्षगांठ का आयोजन होगा। वहाँ से पूना होते हुए पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म. सा.** आदि ठाणा सिवाना से ता. 9 मार्च को पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी म.** आदि ठाणा जहाज मंदिर बिराज रहे हैं। यहाँ से वे 28 फरवरी को पाली की ओर विहार करेंगे। वहाँ 5-6 दिनों की स्थिरता के पश्चात् पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.** आदि ठाणा विहार करते हुए टाटानगर पधारे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता वहाँ रहेगी।

पूजनीया साध्वी **श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म.** आदि ठाणा ने विजयवाडा के निकटवर्ती अहिच्छत्रा पार्श्वनाथ तीर्थ पर बिराज रहे हैं। वहाँ आसपास के क्षेत्रों में विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री प्रियरंजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 ने बाडमेर कुशल वाटिका की

# श्री वर्धमान विद्यापीठ द्वारा आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन में अखिल भारतीय जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा द्वारा संचालित श्री वर्धमान विद्यापीठ द्वारा गत दो वर्षों से साधु साध्वियों तथा मुमुक्षुओं के लिये पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।

इसके तहत सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षा के लिये तीन वर्ष का पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है। गत वर्ष प्रथम वर्ष की परीक्षाऐं संपन्न हुई थी। इस वर्ष प्रथम व द्वितीय वर्ष की परीक्षाओं का आयोजन किया गया। इन परीक्षाओं के आयोजन में पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ने पूरा पुरुषार्थ किया। दोनों वर्षों की परीक्षाओं का परिणाम इस प्रकार रहा।

**प्रथम वर्ष श्रमण वर्ग (** कुल अंक 450 में से)

442 अंक प्राप्त कर पू. साध्वी प्रियसूत्रांजनाश्रीजी म. ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

440 अंक प्राप्त कर पू. साध्वी प्रियवर्षांजनाश्रीजी म. व पू. साध्वी प्रियवीरांजनाश्रीजी म. ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

439 अंक प्राप्त कर पू. साध्वी श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

**प्रथम वर्ष मुमुक्षु वर्ग में** (कुल 400 अंकों में से)

398 अंक प्राप्त कर मुमुक्षु सुश्री विनीता संखलेचा ने प्रथम स्थान पाया।

397 अंक प्राप्त कर मुमुक्षु सुश्री तेजस्वी मंडोवरा व मुमुक्षु सुश्री श्रद्धा लूंकड ने दूसरा स्थान पाया।

395 अंक प्राप्त कर मुमुक्षु सुश्री शिल्पा बालड व मुमुक्षु सुश्री भावना संखलेचा ने तीसरा स्थान पाया।

**द्वितीय वर्ष श्रमण वर्ग** (कुल अंक 500 में से)

497 अंक प्राप्त कर पू. साध्वी प्रियशुभांजनाश्रीजी म. व पू. साध्वी संवरबोधिश्रीजी म. ने प्रथम स्थान पाया।

494 अंक प्राप्त कर पू. साध्वी सत्वबोधिश्रीजी म. ने दूसरा स्थान पाया।

493 अंक प्राप्त कर पू. साध्वी प्रियकल्पनाश्रीजी म., पू. साध्वी सम्यक्प्रभाश्रीजी म. व पू. साध्वी भव्यप्रियाश्रीजी म. ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

**द्वितीय वर्ष मुमुक्षु वर्ग** (कुल अंक 400 में से)

397 अंक प्राप्त कर मुमुक्षु सुश्री वर्षा सेठिया ने प्रथम स्थान पाया।

396 अंक प्राप्त कर मुमुक्षु सुश्री कोमल धारीवाल ने दूसरा स्थान पाया।

390 अंक प्राप्त कर मुमुक्षु सुश्री रुचि संखलेचा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

---

वर्षगांठ के आयोजन के पश्चात् जहाज मंदिर की ओर विहार किया। वे सिणधरी, जीवाणा, भांडवपुर तीर्थ, सायला, उम्मेदाबाद होते हुए ता. 23 फरवरी को जहाज मंदिर पहुँचे हैं। यहाँ से 1 मार्च को विहार कर अहमदाबाद होते हुए पालीताना पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री शुद्धांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा ने चेन्नई से गुण्टुर की ओर विहार किया है। वर्षीतप के पारणे पार्श्ववर्ती तीर्थ ह्रींकार तीर्थ पर संपन्न होंगे।

# तिलोड़ा में १८वीं दीक्षा का मुहूर्त प्रदान

तिलोडा 3 मार्च। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में तिलोड़ा नगर में मुमुक्षु सुश्री शिल्पा मुणोत को भागवती दीक्षा का शुभ मुहूर्त प्रदान किया गया। पूज्य आचार्यश्री दिनांक 28 फरवरी को जहाज मंदिर से विहार कर उम्मेदाबाद सायला चोराऊ सुराणा होते हुए तिलोड़ा पधारे।

तिलोड़ा पधारने पर गच्छाधिपतिश्री एवं साधु-साध्वी मंडल का भव्य सामैया किया गया। परमात्मा का रथ, गजराज आदि के साथ कई मंडलियां उपस्थित थी। मुमुक्षु सुश्री शिल्पा गजराज पर बिराजित होकर उल्लास प्रकट कर रही थी।

मुहूर्त समारोह को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री ने कहा- दियावट पट्टी का मेरे जीवन से अनूठा संबंध रहा है। पूज्य गुरुदेवश्री के स्वर्गवास के बाद पहली दीक्षा इस पट्टी के जीवाणा गांव में संपन्न हुई थी। उन्होंने कहा- संयम ही जीवन जीने की सर्वश्रेष्ठ कला है।

सभा का संचालन करते हुए पूज्य मयूखप्रभसागरजी महाराज ने कहा- दीप से दीपावली मनाने की कला का नाम संयम है। उन्होंने जम्बू कुमार का उदाहरण सुनाते हुए अपने जीवन में कुछ न कुछ त्याग करने की प्रेरणा दी। जब उन्होंने माता-पिता के त्याग की चर्चा की तो उपस्थित सभी श्रद्धालुओं की आंखों से अश्रु बहने लगे। उन्होंने कहा- ऐसे माता-पिता ही जिनशासन की शान है जो अपने पुत्र-पुत्री को उनकी भावना का सम्मान करते हुए शासन को समर्पित करते हैं। पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. व पू. साध्वी श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. ने संयम की महिमा सुनाई। मुमुक्षु शिल्पा ने अपने भावों को व्यक्त करते हुए उपकारी गुरु भगवंत व उपकारी माता-पिता का वर्णन कर मुहूर्त प्रदान करने की विनंती की।

पूज्यश्री ने वैशाख वदि दशम गुरुवार तारीख 6 मई 2021 का शुभ मुहूर्त प्रदान किया, जिसे श्रवण कर मुमुक्षु हर्ष से भर उठी। सकल संघ में आनंद वातावरण फैल गया।

समारोह का आयोजन मुमुक्षु परिवार से श्रेष्ठिवर्य श्री राणमलजी मुणोत परिवार की ओर से किया गया। समारोह में दादाल, जीवाणा, सुराणा, मेंगलवा, सायला, उम्मेदाबाद, एलाना, जालौर, बाड़मेर, बागोड़ा, पोसाणा, उनड़ी, आलासन, पांथेड़ी आदि स्थानों से बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। तिलोड़ा श्रीसंघ द्वारा मुमुक्षु शिल्पा व उनके माता-पिता का बहुमान किया गया। स्वागत भाषण श्री बाबूलालजी मुणोत ने प्रस्तुत किया।

## साधु-साध्वी समाचार

पूजनीया साध्वी **श्री मनोरंजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा विवेकानंद नगर रायपुर बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी **श्री सुभद्राश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 रायपुर से विहार कर खरियार रोड पधारे है। वहां जिनमन्दिर की वर्षगांठ उनकी निश्रा में आयोजित होगी।

पूजनीया साध्वी **श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.** आदि ठाणा नागपुर से विहार कर बेतुल पधार गये हैं।

पूजनीया साध्वी **श्री संघमित्राश्रीजी म.** आदि ठाणा लोहावट बिराज रहे हैं। केयुप के तत्त्वावधान में चल रहे कुशल वाटिका बाडमेर में आयोजित वर्षीतप पारणा समारोह को निश्रा प्रदान करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री श्रद्धान्विताश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 भिवण्डी से चैन्नई की ओर विहार करेंगे।

### श्री सिरेमलजी छाजेड, कवर्धा

कवर्धा 22 फरवरी। पू. खरतरगच्छाचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. के संसारिक भाई श्री सिरेमल जी छाजेड़ (जो कवर्धा छ.ग. में रहते थे) का दिनांक 22.2.2021 को देहावसान हो गया। आप धर्म परायण सुश्रावक थे।

जहाज मंदिर परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

### श्री मिठूलालजी सिरोया, निम्बाहेडा

श्रीमान् मिठूलालजी सिरोया (निम्बाहेडा-बोरीवली) का निधन 13 फरवरी 2021 को हो गया। आपने श्री नाकोडा तीर्थ पर अनेक वर्षों तक सेवायें प्रदान की थी। सरल स्वभावी श्री सिरोया देव-गुरु की भक्ति में समर्पित थे।

जहाज मंदिर परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

### श्री मनोहर जी कोचर, चंद्रपुर

आध्यात्म योगी पूज्य श्री महेन्द्रसागरजी म. एवं युवा मनीषी पूज्य श्री मनीषसागरजी म. के शिष्य पूज्य श्री विवेकसागरजी म. के सांसारिक पिता श्री मनोहरजी कोचर (चंद्रपुर वाले) का राजनांदगांव में निधन हो गया। वे करीब 69 वर्ष के थे।

जहाज मंदिर परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

### श्री ताराचंदजी राखेचा, तिरुच्ची

तमिलनाडु स्थित तिरुच्ची निवासी श्री ताराचंदजी राखेचा (सुपुत्र स्व. श्री खेतमलजी राखेचा लोहावट निवासी) का दिनांक 9.02.2021 को निधन हो गया।

आप दादा जिनकुशलसूरिजी के परम भक्त थे। गच्छ के सभी प्रकल्पों में हमेशा अग्रणी रहते थे। तीर्थयात्रा में आपकी सदैव रुचि रही।

जहाज मंदिर परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

### श्री राजेन्द्रकुमारजी नाहटा, बीकानेर

बीकानेर निवासी श्री राजेन्द्रकुमारजी नाहटा का दिनांक 22 फरवरी को स्वर्गवास हो गया। बीकानेर के प्रतिष्ठित नाहटा परिवार में जन्मे श्री राजेन्द्रकुमारजी मिलनसार स्वभाव के थे। अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर का संचालन आपके सुपुत्र श्री रिषभ कुमारजी कर रहे हैं।

जहाज मंदिर परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

## जसोल में चमत्कार

जसोल 28 जनवरी। श्री खरतरगच्छ जैन श्री संघ जसोल द्वारा संचालित श्री शांतिनाथ जिनमंदिर की 10वीं वर्षगांठ पौष शुक्ल पूर्णिमा ता. 28 जनवरी 2021 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ज्योंहि ध्वजा चढाई गई, त्योंहि अमीझरणा प्रारंभ हो गया। देवकुलिका की सभी दीवारें अमीझरणे से भीग गई। इस चमत्कार को देखकर सारी जनता अभिभूत हो उठी।

यह चमत्कार इस मंदिर की प्रतिष्ठा से ही प्रारंभ है। इस मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में सन् 2011 में संपन्न हुई थी। उस दिन जो अमीझरणो हुआ था, वह 5 घंटों तक निरन्तर चला था। दीवारों से, स्तंभों से सर्वत्र अमीझरणे का प्रवाह बह रहा था।

तब से हर वर्ष वर्षगांठ के अवसर पर अमीझरणा होता है।

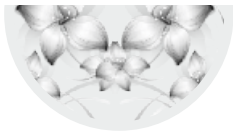

# जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक

श्री लालचन्दजी कानमलजी गुलेच्छा, अक्कलकुआं
श्री राजेन्द्रकुमार राणुलालजी डागा, अक्कलकुआं
श्री भंवरलालजी हस्तीमलजी कोचर, अक्कलकुआं
श्री ज्ञानचन्दजी रामलालजी लूणिया, अजमेर
श्री पूनमचन्दजी नैनमलजी मरड़िया, डंडाली- अहमदाबाद
श्री माणकमलजी मांगीलाल नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन-अहमदाबाद
श्री विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्यामप्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
श्री जगदीशचन्द, नितेश कुमारजी छाजेड़ (हरसाणी-बाड़मेर) हाल इचलकरंजी
श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर- इचलकरंजी
श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर- इचलकरंजी
श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़-इचलकरंजी
श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित-इचलकरंजी
श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना-इचलकरंजी
शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इचलकरंजी
श्री प्रवीणकुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इचलकरंजी
श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी रमेश अशोक लूंकड़ मोकलसर-इचलकरंजी
श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़, इंचलकरंजी
शा. पीरचंद बाबुलाल एण्ड कं., बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अरूणकुमारजी बापूलालजी डोसी, इन्दौर
श्री टीकमचन्दजी हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन
डॉ. यू.सी. जैन अजयजी संजयजी लषितजी पार्थ जैन, उदयपुर
श्री फतेहलालजी सुल्तानजी लक्ष्मणजी आजादजी संजयजी सिंघवी, उदयपुर
श्री मोहनसिंहजी पुत्र राजीव पौत्र चिराग दलाल, सुराणा, उदयपुर
श्री सुधीरजी चावत, उदयपुर
श्री किरणमलजी सावनसुखा, उदयपुर
श्रीमती शान्ति मेहता ध.प.श्री विजयसिंहजी मेहता, उदयपुर
श्री दौलतसिंहजी प्रतापसिंहजी गॉधी, उदयपुर
श्री शंकरलालजी बाफना, उदयपुर
श्रीमती शांतादेवी जुहारमलजी गेलड़ा, उदयपुर
श्री नगराजजी पवनराजजी अशोककुमारजी मेहता, उदयपुर
श्री बलवन्तसिंहजी करणसिंह सुरेन्द्रसिंह पारख, उदयपुर
श्री मीठालालजी मनोजकुमार गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद-बैंगलोर
श्री दिलीपजी छाजेड़, खांचरोद-उज्जैन
श्री कुरीचन्दजी चन्दनमलजी मलासिया, ऋषभदेव
शा. कांतिलालजी पारसमलजी कागरेचा, ओटवाला
श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना-कारोला-मुंबई
घोड़ा श्री सुमेरमलजी मोतीलालजी बाबूलालजी श्रीश्रीमाल, केशवणा
श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा- डोम्बीवल्ली
श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया, कोटा
श्री पन्नालालजी महेन्द्रसिंहजी गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता-दिल्ली
श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
श्री पारसमलजी मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया
श्री किशनलालजी हसमुख कुमार मिलापजी भंसाली, खेतिया

श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया-नासिक
श्री नेवलचन्दजी मोहनलालजी जैन, गाजियाबाद
शा. मुलतानमलजी भवंरलालजी नाहटा, गांधीनगर
मिस्त्री मोहनलाल आर. लोहार, पो. चांदराई जि.जालोर
शा. जांवतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, धोरीमन्ना-चैन्नई
श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा, टिंडीवनम-चैन्नई
शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना-चैन्नई
श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद-चैन्नई
श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चैन्नई
श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर-चैन्नई
शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू-चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
श्री पदमचंदजी दिनेशकुमारजी कोठारी, चैन्नई
मै. एम. के. कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
श्री वीरेन्द्रमलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी-चैन्नई
श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़सिवाना-चैन्नई
श्रीमती इचरजबाई मिलापचंदजी डोसी, चैन्नई
एम. नरेन्द्रकुमारजी कवाड़, चैन्नई
श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
श्री आर. मफतलाल, सौभागबेन चन्दन, चैन्नई
श्री बाबूलालजी हरखचन्दजी छाजेड़ (सी.टी.सी.), चेन्नई
शा. जेठमलजी आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
मै. राखी वाला, चैन्नई
श्री द्वारकादासजी पीयुष अनिल भरत महावीर डोशी, चौहटन
श्री महताबचन्दजी विशालकुमारजी बांठिया, जयपुर-मुंबई
श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
श्री जुगराजजी(सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर- भायंदर
श्री विमलचंदजी सौ. मेमबाईसा सुराणा, जयपुर
श्री किशनचन्दजी बोहरा सौ. सुधादेवी, जयपुर
श्री कनकजी श्रीमाल, जयपुर
श्री महावीरजी मुन्नीलालजी डागा, जयपुर
श्रीमती जतनबाई ध.प. स्व. मेहताबचंदजी गोलेछा, जयपुर
श्रीमती सरोज फतेहसिंहजी सिद्धार्थजी बरड़िया, जयपुर
श्री रूपचन्दजी नरेन्द्र देवेन्द्र नमनजी भंसाली, हालावाले-जयपुर
श्री दुलीचन्दजी, धर्मेशकुमारजी टांक, जयपुर
श्री महरचन्दजी मनोजकुमारजी धांधिया, जयपुर
श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर
श्री जितेन्द्रजी नवीन अजय नितीन महमवाल-श्रीमाल, जयपुर
श्री राजेन्द्रकुमारजी संजयजी संदीपजी छाजेड़, जयपुर
श्री इन्द्रचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
श्री विमलचन्दजी महावीरचन्दजी पंसारी, जयपुर
श्री पारसमलजी पंकजकुमारजी गोलेछा, जयपुर
श्री शांतिचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी पुंगलिया, जयपुर
श्री हुकमीचन्दजी विजेन्द्रजी पूर्णेन्द्रजी कांकरिया, जयपुर
श्री ताराचन्दजी विजयजी अशोकजी राजेन्द्रजी संचेती, जयपुर
श्री भीमसिंहजी तेजसिंहजी खजांची, जयपुर
श्री सौभागमलजी ऋषभकुमारजी चौधरी, जयपुर
श्री संतोषचन्दजी विजयजी अजयजी झाड़चूर, जयपुर
श्री रतनलालजी अतुल अमित श्रीश्रीमाल हालावाले जयपुर
श्री माणकचन्दजी राजेन्द्रजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर
श्री उमरावचन्दजी प्रसन्नचन्दजी किशनचन्दजी डागा, जयपुर
श्री अभयकुमारजी अशोककुमार अनूपकुमार पारख-जयपुर
श्री त्रिलोकचन्दजी प्रेमचन्दजी सिंघी, जयपुर
श्री घनश्यामदास दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
श्री सुरेन्द्रमलजी गजेन्द्रजी धर्मेन्द्रजी पटवा, जालौर
संघवी शा. अशोककुमारजी मानमलजी गुलेच्छा, जीवाणा- चैन्नई
श्री भंवरलालजी, बाबूलालजी पारख, जीवाणा
संघवी कानमलजी बाबूलालजी नेमीचंदजी अशोकजी गोलेछा, जीवाणा-चेन्नई
श्री खीमचन्दजी अशोककुमारजी कंकूचौपड़ा, जीवाणा- बैंगलोर
श्रीमती प्रेमलताजी श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, जोधपुर
श्री गोविन्दचन्दजी राजेशजी राकेशजी मेहता जोधपुर-मुम्बई
श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर
श्री लूणकरणजी घीसुलालजी सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
श्रीमती इन्द्रा महेशजी जैन नाहटा नई दिल्ली
श्री बी.एम. जैन लक्ष्मीनगर, दिल्ली
श्री घनश्यामदासजी नवीनजी सुशीलजी सुनीलजी जैन, नई दिल्ली
श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली
श्री शीतलदासजी विरेन्द्रकुमारजी राक्यान, नई दिल्ली
श्री ज्ञानचन्दजी महेन्द्रकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री पवित्रकुमारजी सुनीलजी, गुनीतजी बाफना, कोटा-नई दिल्ली
श्री अरुणकुमारजी हर्षाजी हर्षावत, नई दिल्ली
श्री राजकुमारजी ओमप्रकाशजी रमेशकुमारजी चौरड़िया, नई दिल्ली
श्री मोतीचन्दजी श्रीमती आभादेवी पालावत, नई दिल्ली
श्री विरेन्द्रजी राजेन्द्रजी अभिषेकजी आदित्यजी पीयूषजी मेहता, दिल्ली

श्री रिखबचंदजी राहुलकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री अशोककुमारजी श्रीमती चंदादेवी जैन, नई दिल्ली
श्रीमती नीलमजी सिंघवी, नई दिल्ली
श्रीमती विजयादेवी धीरज बहादुरसिंहजी दुग्गड़, नई दिल्ली
श्री शांतिप्रकाशजी अशोककुमार प्रवीण सिंधड़, अनूपशहर, नई दिल्ली
श्रीमती भारतीबेन शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली
श्री सुमेरमलजी मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर-दिल्ली
श्री चन्द्रसिंहजी विपुलकुमारजी सुराणा, दिल्ली
श्री प्रकाशकुमारजी प्रेणितकुमारजी नाहटा, जसोल-दिल्ली
शा. महेशकुमारजीर विरधीचंदजी गांधी, धोरीमन्ना
श्रीमती भंवरीदेवी गोरधनमलजी प्रतापजी सेठिया, धोरीमन्ना
संघवी मुथा चन्दनमलजी महेन्द्र नरेन्द्र तातेड़, पादरू-नंदुरबार
श्री भँवरलालजी ललित राजु कैलाश गौतम संखलेचा, पादरू- चैन्नई
श्री मूलचंदजी बख्तावरमलजी बाफना हीराणी, पादरू
संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू-मुम्बई-चैन्नई
श्री भंवरलालजी नेमीचन्दजी कटारिया, पादरू
श्री रूपचन्द जवेरीलालजी गोलेछा ढालूवाले, पादरू
मेहता शा. पुखराज सुमेरमलजी तातेड़, पादरु-सेलम
श्री बाबूलालजी शर्मा, राकांवत डेकोरेटर्स, तखतगढ़-पाली
शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति,गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
श्री रतनचन्दजी सौ. निर्मलादेवी बच्छावत, फलोदी
श्री रमेशचन्दजी सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी
श्री मनोहरमलजी दलपतकुमार महेश हरीश नाहटा, हालावाले फालना
श्री खूबचन्दजी चन्दनमलजी बोहरा, हालावाले फालना
श्री मोतीचन्दजी फोजमलजी झाबक, बड़ौदा
श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा
श्री आसुलालजी मांगीलालजी बाबूलालजी डोशी, चौहटन-बाड़मेर
श्री चिन्तामणदासजी, तगामलजी बोथरा, बाड़मेर
श्री रिखबचंदजी प्रकाशचन्दजी सेठिया, चौहटन-बाड़मेर
श्री रतनलालजी विनोदकुमार गौतमकुमार बोहरा, हालावाले, बाड़मेर
श्री आसूलालजी ओमप्रकाशजी संकलेचा, बाड़मेर
श्री रामलाल, महेन्द्र, भरत, धवल मालू, डाकोर-बाडमेर
श्री जगदीशचन्द देवीचन्दजी भंसाली, बाड़मेर-पाली
श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
श्री बाबूलाल भगवानदासजी बोथरा, बाड़मेर
शा. मनसुखदास नेमीचंदजी पारख, हरसाणीवाला, बाड़मेर
शा. सुरेशकुमार पवनकुमार मुकेशकुमार पुत्र श्री शंकरलाल बोहरा, बाड़मेर
श्री मुन्नीलालजी जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा
शा. अमृतलालजी पुखराजजी कटारिया सिंघवी बालोतरा- मुंबई
श्री उत्तमराजजी पारसकंवर सिंघवी, बिजयनगर
श्री सम्पतराजजी सपनकुमारजी गादिया, पाली बैंगलौर
श्री पुखराजजी हस्तीमलजी पालरेचा, मोकलसर-बैंगलोर
शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव-बैंगलोर
श्री आनन्दकुमारजी कांतिलाल प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हालावाले बैंगलोर
श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर
संघवी श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर- बैंगलोर
श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर
श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर बैंगलोर
शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर
श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी, मोकलसर-बैंगलोर
शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना-बैंगलोर
श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजाणी रांका, बैंगलोर
श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर
श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर
संघवी शा. मांगीलालजी भरतमलजी, बैंगलोर
श्री पी. एच. साह, बैंगलोर
श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर
श्री माणकचंदजी, गौतमचंदजी चौपड़ा, ब्यावर
श्री संजयकुमारजी, कनिष्ठकुमारजी बरडिया, ब्यावर
श्री ओमप्रकाशजी राजेशजी (ओमजी दवाईवाला), ब्यावर
श्री उगमराजजी सुरेशकुमारजी मेहता, ब्यावर
सेठ श्री शंभुमलजी बलवन्तजी यशवंतजी रांका, ब्यावर
श्री मदनलालजी दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
श्री कुशलचंदजी पारसकुमारजी सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर
श्री शांतिलालजी सज्जनराजजी कुशलराजजी ऋषभ तातेड़-गडवानी, ब्यावर
श्री कानसिंहजी मधुसूदन सुदर्शन संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा
श्री जीवनसिंहजी दीपककुमार राजेशकुमारजी लोढ़ा, गुरलां-भीलवाड़ा

श्री प्रेमसिंहजी राजेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी बोहरा गुरलां-भीलवाड़ा
श्री भंवरलालजी बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां-भीलवाड़ा
शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी-मल्हारपेठ
संघवी श्री हंसराजजी रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा मांडवला
शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला
मूथा शा. नेनमलजी पन्नालालजी सोनवाड़िया, मांडवला
श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड़, मांडवला-मुम्बई
श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी चेतनजी जैन पाली-मुम्बई
श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू-मुम्बई
श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर-मुम्बई
श्री महेन्द्रकुमारजी शेषमलजी दयालपुरा वाले, मुम्बई
श्री कन्हैयालालजी भगवानदासजी डोसी-मुम्बई
श्री रिखबचन्दजी जैन, मुम्बई
शा. अनिल रणजीतसिंहजी पारख, जोधपुर-मुंबई
श्रीमती टीपूदेवी कालुचंदजी, बदामीदेवी अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचौर-मुंबई
शा. भंवरलालजी कमलचन्द रिषभ गुलेच्छा, मुम्बई
श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई
श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा-मुंबई
श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई
श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई
श्री गौतमचंद डी. भंसाली, मुंबई
शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई
श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, सांचौर-मुंबई
श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, डुठारिया-मुंबई
श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल, फालना-मुंबई
श्री भंवरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़, हरसाणी-मुंबई
श्री वंसराजजी मिश्रीमलजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री मीठालालजी अमीचंदजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री किस्तुरचन्दजी छगनलालजी चौपड़ा, रतलाम
श्री मदनलालजी रायचन्दजी शंखलेशा, रामा-कल्याण
श्री अनूपचन्दजी अनिल अशोक अजय कोठारी, रायपुर
श्री नेमीचन्दजी श्यामसुन्दरजी बेदमुथा, रायपुर
श्री उमेशकुमारजी मुकेशकुमारजी तातेड़, रायपुर
स्व. हस्तीमलजी छोगाजी हिरोणी, रेवतडा-चेन्नई
श्री नथमलजी भंवरलालजी सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट
श्रीमती शांताबेन हरकचन्दजी बोथरा, सांचौर
श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचौर-मुम्बई
श्री धुडचंदजी रतीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर-मुम्बई
श्री रावतमल सुखरामदास कमलेश विमल धारीवाल चौहटन-सांचौर
श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचौर
स्व. दाड़मीदेवी श्री पुखराजजी बोथरा, सांचौर
श्री हरकचन्दजी सेवन्तीजी जितेन्द्र विनोद राजेश शाह, सांचौर
शा. प्रकाशंचद पारसमलजी छाजेड़, सांचौर
श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर-हैदराबाद
श्री दिलीपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर- मुंबई
श्री जुगराजजी रमेशजी उत्तमजी महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना- मदुराई
श्रीमती सुखीदेवी श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़, सिवाना-पूना
श्री पारसमलजी चंपालालजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री प्रकाशकुमार अंकितकुमारजी जीरावला, सूरत
श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा-हैदराबाद
श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री बाबूलालजी मालू-सूरत
श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़-बाड़मेर-सूरत
शा. पारसमलजी शेरमलजी गोठी, डांगरीवाला-सूरत
श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
श्री भीकमचन्दजी बाबूलालजी तोगमलजी गोलेछा, पादरू-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपड़ा, बिलाडा-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
श्री गौतमचन्दजी मीनादेवी सौरभ, सुलभ कोठारी,रायपुर (छ.ग.)
श्रीमती सुरजदेवी गुलाबचन्दजी मुणोत, रायपुर (छ.ग.)
श्री भूरमलजी नवलखा राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री संजयजी सिंघी, राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री हस्तीमलजी अभिषेक कुमार धारीवाल, बाड़मेर
-श्री जसराज राणुलालजी कोचर, अक्कलकुआ
-श्री मेघराजजी तेजमलजी ललवानी, अक्कलकुआ
-श्री पुण्यपालजी अनिलजी सुनीलजी सुराणा, इन्दौर
-श्री गेंदमल पुखराजजी चौपड़ा, उज्जैन
-श्री रतनचन्द जयकुमार जिनेन्द्रकुमार चौपड़ा, उज्जैन
-श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचौर-बडोदरा
-श्री धवलचन्दजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
-श्री पारसमलजी हंजारीमलजी बोहरा, सांचौर
-श्री चुन्नीलालजी मफतलालजी मरड़िया, सांचौर-सूरत
-श्री गौतमचन्दजी राजमलजी डूंगरवाल, देवड़ा-सूरत
-श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाड़मेर-सूरत
-शा. जुगराजजी मिश्रीमलजी तलावट, उम्मेदाबाद-सेलम
-श्री कन्हैयालालजी मुकेशकुमारजी, सोमपुरा, लुणावा

# जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर अपनी पत्नी के साथ वार्तालाप कर रहा था। अचानक जटाशंकर ने पूछा- क्या तुम्हें गुस्सा आता है?

पत्नी ने मुस्कुराते हुए कहा- आता है।

जटाशंकर- कब आता है?

पत्नी ने कहा- उस समय आता है, जब मैं तुमसे साडी की फरमाईश करती हूँ!

पति ने कहा- इसमें गुस्से की क्या बात है!

पत्नी- अरे! पूरी बात तो सुनो। जब मैं तुमसे साडी लाने को कहती हूँ। और तुम ले आते हो।

जटाशंकर- तो इसमें क्रोध करने की क्या बात है! तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिये कि तुमने कहा और मैं ले आया। यदि नहीं लाता हूँ तब तो गुस्सा करने की बात समझ में आती है।

पत्नी बोली- तुम समझे नहीं। जब तुम मेरी बात स्वीकार कर तुरन्त साडी ले आते हो, तब मुझे खुद पर गुस्सा आता है।

जटाशंकर- क्या!

पत्नी- हाँ, मैं अपने आपको कहती हूँ- अरी मूरखा! ये तुमने क्या किया! मात्र साडी मांगी, सोने का हार मांगती तो कितना अच्छा होता! बस! इन विचारों से मैं अपने आप पर बहुत रुष्ट हो जाती हूँ।

पत्नी का जवाब सुनकर जटाशंकर का मुंह खुला का खुला रह गया।

**संसार की ऐसी ही स्थिति है। इच्छाओं का संसार है। इच्छापूर्ति ही मुख्य है। इच्छाऐं स्वार्थ और लोभ का साम्राज्य खड़ा करती है। संसार के यथार्थ-बोध से ही सन्मार्ग का ज्ञान होता है।**

## मुंबई के भूलेश्वर में कबूतर खाने का भूमि पूजन

मुंबई 16 फरवरी। बसंत पंचमी के पावन अवसर पर मुंबई के हृदय स्थल भूलेश्वर कबूतर खाने का भूमि पूजन आकाश राज पुरोहित के आतिथ्य में श्रीमती शांतादेवी जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार द्वारा संपन्न हुआ।

यहां कबूतरों का चबूतरा, दाना-पानी और जन मानस के लिए शीतल जल प्याऊ का नव निर्माण किया जाएगा।

## शक्रस्तव अभिषेक व ज्ञान वाटिका का प्रारंभ

भिवंडी 25 फरवरी। भिवंडी में पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. प्रव. श्री सज्जनश्रीजी म., पू. प्रव. श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्रद्धान्विताश्रीजी म., पू. साध्वी शुक्लप्रज्ञाश्रीजी एवं पू. साध्वी महाप्रज्ञाश्रीजी म. की निश्रा में भिवंडी में शक्रस्तव अभिषेक व ज्ञान वाटिका का प्रारंभ किया गया। इस अवसर अनेक लोग उपस्थित थे।

# जहाज मंदिर में मुहूर्त उद्घोषणा की झलकियां

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

मुमुक्षु श्रीमती पुष्पाजी बैद, रायपुर

मुमुक्षु कु. मुस्कान बोहरा, धोरीमन्ना

मुमुक्षु कु. शिल्पा मुणोत, तिलोडा

ममुक्षु कु. विनीता संकलेचा, बाडमेर

मुमुक्षु कु. नीलिमा भंसाली, झाब

मुमुक्षु कु. डिम्पल श्रीश्रीमाल, सायला

मुमुक्षु कु. रूचिका संकलेचा, पादरू

मुमुक्षु कु. सोना माल, बाडमेर

मुमुक्षु कु. भावना संकलेचा, बाडमेर

मुमुक्षु कु. रविना सेठिया, चौहटन

मुमुक्षु कु. माधुरी कंकु चौपडा, सिवाना

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर ( राजस्थान )
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर ( राज. ) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408